(SUGAR BOILED CONFECTIONERY)
CONTAINS - SUGAR, LIQUID GLUCOSE, EDIBLE VEGETABLE OILS
CHOCOLATE POWDER, SKIMMED MILK POWDER, SALT
EDIBLE STARCH, PERMITTED EMULSIFYING & ADDED FLAVOURS
AMBIC FOOD PRODUCTS
GWALIOR-1 PHONE 29668
AMBIC

कोई मनुष्य शारीरिक व मानसिक दृष्टि से चाहे जितना ही सक्षम क्यों न हो यदि वह मादक पदार्थों का सेवन करके गाड़ी चलाएगा तो दुर्घटना कर बैठेगा। मद्य से मनुष्य की मानसिक प्रतिक्रियाएं सुस्त पड़ जाती हैं। इसके अलावा यह अन्य मादक पदार्थों से बुरी तरह मिल जाता है और मनुष्य की मानसिक सबलता को बुरी तरह काम कर देता है।

कई औषधियां भी शरीर में ऐसी प्रतिक्रियाएं उत्पन्न करती हैं जिनसे इंद्रियों की चेतनता और उनकी मानसिक सजगता बहुत कम हो जाती है। यात्रा के दौरान मतली आने व जी घबराने से बचने के लिए खाई जाने वाली गोलियां; इसी प्रकार ... (ट्रांक्विलाइजर्स) व नींद लाने की गोलियों का सेवन मनुष्य की गाड़ी चलाने की क्षमता को कम कर देते हैं। ... प्रकार बेन्जीड्रीन की गोलियां भी (जिनका मुख्य ... कोई ऐम्फीटामीन होता है) जोकि उद्दीपन के लिए खाई जाती ... भी गाड़ी चलाने की क्षमता पर दुष्प्रभाव डालती हैं। थकान और बोरियत से भी दुर्घटनाएं हो जाती हैं ... आरामदेह स्थिति, गर्मी-सर्दी से बचाव और वायु के आने-जाने के लिए भी व्यवस्था करने का ... मोटर यात्रा पर निकलने पर हल्का भोजन करना चाहिए जिससे कि निद्रालसा न सताए। ... पर्याप्त आराम के लिए समय निकालना जरूरी है।

CON
CHO
EDIBL
AMBIC
GWALIO
...ED CONFEC
...GLUCOSE,
...MMED MILK
...D EMULSIFY
...UCTS

यदि आप बल के अभिमान से लड़ना चाहते हैं तो जाओ जिससे हमारी योगिनियां तुम्हारे माँस से तृप्त हों ॥२७॥ क्योंकि शिवजी को देवी ने स्वयं दूत कार्य के लिए नियुक्त किया

तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥ २७ ॥ यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवःस्वयम् । शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता ॥ २८ ॥ तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः । अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता ॥ २९ ॥ ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः । ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः ॥ ३० ॥ सा च तान् प्रहि-

इसलिये वह संसार में शिवदूती नाम से प्रसिद्ध हुई ॥२८॥ शिव द्वारा देवी के वचन सुन सारे महासुर अभिमान के साथ कात्यायनी की ओर बढ़े ॥२९॥ क्रोध में भरे उद्धत असुरों ने पहिले

ही से बाण, शक्ति और ऋष्टि की देवी पर वर्षा कर दी ॥३०॥ देवी ने उनके चलाये बाण, शूल, शक्ति और पाश आदि अस्त्रों को अपने बाणों से काट कर गिरा दिया ॥३१॥ फिर काली

तान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान् । चिच्छेद लीलयाध्मात धनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥ ३१ ॥ तस्याग्रतस्तथा काली शूलपात— विदारितान् । खट्वाङ्ग पोथितांश्चारीन कुर्वती व्यचरत्तदा ॥ ३२ ॥ कमण्डलु जलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः । ब्रह्माणी चाकरोच्छ- त्रून् येन येन स्म धावति ॥ ३३ ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी । दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्याति—

उनके आगे होकर असुरों को त्रिशूल से चीरती और खट्वाङ्ग से कुचलती हुई विचरने लगी ॥३२॥ ब्रह्माणी इधर उधर घूमकर कमण्डलु के जल से शत्रुओं को शक्तिहीन निस्तेज करने लगी

॥३३॥ माहेश्वरी ने त्रिशूल से, वैष्णवी ने चक्र से, कौमारी ने शक्ति से दैत्यों का हनन किया॥३४॥ इन्द्राणी के वज्र प्रहार से सैंकड़ों दैत्य दानव रक्त गिराते हुए पृथ्वी पर जा पड़े ॥३५॥ वाराही

कोपना ॥ ३४ ॥ ऐन्द्री कुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः । पेतुर्विदारिता पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥ ३५ ॥ तुण्डप्रहार—विध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः । वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिता ॥ ३६ ॥ नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महा-सुरान् । नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा ॥ ३७ ॥ चण्डा-ट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः । पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्च-

शक्ति ने कितनों को अपनी थोथड़ी के वार से व्यथित, दन्ताग्र से छाती घायल कराकर तथा चक्र के प्रहार से अनेकों असुरों को नष्ट किया ॥३६॥ नारसिंही ने भी नखों से चीरकर अनेक असुरों

को भक्षण कर अपने नाद से आकाश व दिशाओं को गुंजाती हुई युद्धभूमि में घूमने लगी ॥ ३७॥
शिवदूती के तीव्र अट्टहासों के द्वारा असुर भूमि पर गिरने लगे और वह उनको खाने लगी ॥ ३८॥

खादाथ सा तदा ॥ ३८ ॥ इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महा-
सुरान् । दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ॥ ३९ ॥
पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान् । योद्धुमभ्या-
ययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः ॥ ४० ॥ रक्तबिंदुर्यदा भूमौ
पतत्यस्य शरीरतः । समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः
॥ ४१ ॥ युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः । ततश्चै-

इस प्रकार जगन्मातायें क्रुद्ध हो असुरों को मसलने लगीं, असुर सैनिक अनेक रीति से असुरों
को नष्ट होते हुए देख भाग खड़े हुए ॥३९॥ तथा मातृगणों से पीड़ित दैत्यों को भागते देख रक्त

बीज नामक महा असुर क्रोध में भरकर युद्ध करने आया ॥४०॥ जितनी रक्त की बून्दें उसके शरीर से भूमि पर गिरतीं उतने ही असुर उत्पन्न हो जाते थे ॥४१॥ वह महासुर गदा हाथ में लेकर

न्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् ॥ ४२ ॥ कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम् । समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्परा-क्रमाः ॥ ४३ ॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः । तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः ॥ ४४ ॥ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः । समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपा-तातिभीषणम् ॥ ४५ ॥ पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा ।

इन्द्र शक्ति से लड़ने लगा, इस पर ऐन्द्री ने अपने वज्र से उसपर प्रहार किया ॥४२॥ वज्र की चोट से उसके शरीर से बहुत रुधिर गिरा जिससे उतनी ही संख्या में रक्त बीज के पराक्रम के तुल्य

ही योधा उत्पन्न हो गए ॥४३॥ उसके शरीर से जितनीं रक्तबिन्दू भूमि पर पड़ीं उतने ही पुरुष उसके बल, वीर्य और पराक्रम के समान उत्पन्न हो गए ॥४४॥ रक्त से उत्पन्न होने वाले

ववाह रक्त पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः ॥ ४६ ॥ वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह । गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् ॥ ४७ ॥ वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः । सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरः ॥ ४८ ॥ शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना । माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्त-बीजं महासुरम् ॥ ४९ ॥ स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत्

पुरुष भी भयंकर अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा करते हुए देवियों के साथ भीषण युद्ध करने लगे ॥४५॥ फिर वज्र के प्रहार से इन्द्राणी ने जब उसका शिर फोड़ दिया तो फिर बहुत रक्त बहा और

उससे हज़ारों पुरुष उत्पन्न हो गए ।।४६।। वैष्णवी ने चक्र से उसपर प्रहार किया और ऐन्द्री ने उस असुर राज पर गदा से चोट मारी ।।४७।। वैष्णवी के चक्र की चोट से जो रक्त बहा

पृथक् । मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥ ५० ॥
तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि । पपात यो वै
रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥ ५१ ॥ तैश्चासुर सृक्सम्भूतैर-
सुरैः सकलं जगत् । व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मु-
रुत्तमम् ॥ ५२ ॥ तान्विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह
सत्वरा । उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥ ५३ ॥

उससे हजारों महासुर उत्पन्न होकर संसार में भर गए ।।४८।। कौमारी ने शक्ति से तथा वाराही ने तलवार से और माहेश्वरी ने त्रिशूल से प्रहार किया ।।४९।। क्रोध में भर रक्त बीज

ने भी गदा से सब देवियों पर वार किया ॥५०॥ रक्त बीज के शरीर में शक्ति, शूल आदि शस्त्रों के लगने से जो रक्त निकला उससे सैंकड़ों असुर उत्पन्न हो गये ॥५१॥ असुर के

मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान् । रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना ॥ ५४ ॥ *भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान् । एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥ ५५ ॥ भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे । इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ॥ ५६ ॥ †मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् । ततोऽसावा

रक्त से उत्पन्न हुए असुरों से सारा जगत व्याप्त हो गया जिससे देवता बहुत डरे ॥५२॥ देवताओं को खिन्न देखकर चण्डिका काली से बोली, हे चामुण्डे ! अपने मुख को फैलाओ

---

* † हवन में इस श्लोक के साथ लाल चन्दन की आहुति दें।

॥५३॥ मेरे अस्त्रों के लगने से निकले रक्त बिन्दुओं तथा रक्त बिन्दुओं से उत्पन्न असुरों को शीघ्र ही अपने मुख में ॥५४॥ भक्षण करती हुई युद्ध में विचर, इस प्रकार यह असुर

जघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम् ॥ ५७ ॥ न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि । तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ॥ ५८ ॥ यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति । मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महा-सुराः ॥ ५९ ॥ तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् । देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ॥ ६० ॥ जघान

रक्त से क्षीण हो जाएगा ॥५५॥ तुझ से भक्षण किये जाने पर और उत्पन्न न होंगे, यह कह कर चण्डिका ने रक्त बीज को शूल मारना प्रारम्भ किया ॥५६॥ शूल के लगने से जो

रक्त गिरा उसे काली ने अपने मुख में लिया, असुर ने भी अपनी गदा से चण्डिका पर प्रहार किया ॥५७॥ असुर की गदा के प्रहार से देवी के शरीर में कुछ भी पीड़ा नहीं हुई,

रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम् । स पपात महीपृष्ठे शस्त्र सङ्घसमाहतः ॥ ६१ ॥ नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः । ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप ॥ ६२ ॥ तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ॥ ॐ ॥ ६३ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये

परन्तु असुर के शरीर से बहुत रक्त निकला ॥५८॥ असुर के शरीर से जो रक्त निकला चामुण्डा चारों ओर से उस को अपने मुख में लेती और जो असुर उससे उपजता ॥५९॥ उन्हें वहीं भक्षण कर लेती इस तरह चामुण्डा ने उसका रक्त पी लिया और चण्डिका ने

शूल, वज्र, बाण, तलवार और ऋष्टि आदि से ॥६०॥ रक्त बीज को जिसका चामुण्डा ने रक्तपान कर लिया था मारा वह शस्त्रों की चोट से भूमि पर जा पड़ा ॥६१॥ हे राजन् ! महासुर रक्तबीज इस प्रकार रक्त रहित हो गया और देवता अपार हर्ष को प्राप्त हुए ॥६२॥ जगन्मातायें असुरों का रक्त पी-पी कर उद्धत हो नृत्य करने लगी ॥६३॥ इति ॥

रक्तबीजवधो नामाष्टमो ऽध्यायः ॥८॥ उवाच १ । अर्ध० श्लोक १ । श्लो० ६१ । एवम् ६३ । एवमादितः ५०२ ॥

अथ नवमोऽध्यायः

अथ ध्यानम

ॐ बन्धूककांचननिभं रुचिराक्षमालां पाशांकुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः। बिभ्राणामिन्दुशकलाभरणां त्रिनेत्रमर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि ॥१॥

जिसका वर्ण बन्धूक- पुष्प और सुवर्ण के समान रक्त-पीत मिश्रित है। जो अपनी भुजाओं में सुन्दर अक्षमाला, पाश, अङ्कुश और बरद मुद्रा धारण करता है, अर्धचन्द्र जिसका आभूषण है और जो तीन नेत्रों से सुशोभित है उस अर्धनारीश्वर श्रीविग्रह की मैं निरन्तर शरण लेता हूँ।

ॐ राजोवाच ॥ १ ॥ विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम ।

राजा सुरथ ने कहा ॥१॥ कि यह आपने रक्तबीज के वध से सम्बन्धित देवी चरित्र का अद्भुत माहात्म्य मुझे बतलाया है ॥२॥ रक्तबीज के मारे जाने का शुम्भ

देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥ २ ॥ भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते । चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः ॥ ३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ४ ॥ चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते । शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥ ५ ॥ हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन् । अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया ॥ ६ ॥ तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महा-

और निशुम्भ ने जो काम किया मैं अब उसको सुनना चाहता हूँ ॥३॥ ऋषि बोले ॥४॥ रक्तबीज तथा अन्य असुरों के मरने पर शुम्भ और निशुम्भ अत्यन्त क्रोधित हुए ॥५॥

अपनी महान सेना का वध देख क्रोध में भर निशुम्भ असुरों की मुख्य सेना को साथ ले लड़ने चला ॥६॥ निशुम्भ के आगे पीछे दायें बायें बड़े २ असुर क्रोध में भरे ओष्ठ चबाते

सुराः । संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धाः हन्तुं देवीमुपाययुः ॥ ७ ॥ आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः । निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥ ८ ॥ ततो युद्धमतीवासीद्देव्या शुम्भनिशुम्भयोः । शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥ ९ ॥ चिच्छेद तांछरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः । ताडयामास चांगेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥ १० ॥ निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म

हुए देवी को मारने चले ॥७॥ अत्यन्त शक्तिशाली शुम्भ भी अपनी सेना को साथ ले सब देवियों से युद्ध करके चण्डिका को मारने के लिये आ पहुंचा ॥८॥ शुम्भ और निशुम्भ का

देवी के साथ भारी युद्ध हुआ, वर्षा के समान दोनों ओर से बाणों की वर्षा हुई ॥६॥ असुरों के बाणों को चण्डिका ने अपने बाणों से काट डाला और दोनों असुरों पर बाणों से वार

चादाय सुप्रभम् । अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम्
॥ ११ ॥ ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम् । निशुम्भस्याशु
चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥ १२ ॥ छिन्ने चर्मणि खड्गे च
शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः । तामप्यस्य द्विधाचक्रे चक्रेणाभिमुखा-
गताम् ॥ १३ ॥ कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः ।
आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ॥ १४ ॥ आविध्याथ

किया ॥१०॥ निशुम्भ ने अपनी तीक्ष्ण तलवार तथा चमकती हुई ढाल लेकर देवी के श्रेष्ठ वाहन सिंह के शिर पर प्रहार किया ॥११॥ सिंह पर हुए प्रहार को देख देवी ने क्षुरप्र नामक

अस्त्र से असुर की तलवार तथा अष्ट चन्द्रक ढाल काट डाली ॥१२॥ खड्ग और ढाल के कट जाने पर असुर ने शक्ति से वार किया जिसको देवी ने चक्र के द्वारा सम्मुख आते ही काट

गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति । सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता ॥ १५ ॥ ततःपरशुहस्त तमायान्तं दैत्य-पुङ्गवम् । आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले ॥ १६ ॥ तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे । भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् ॥ १७ ॥ स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः । भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥ १८ ॥ तमा-

डाला ॥१३॥ निशुम्भ ने क्रोध से भर शूल से प्रहार किया, देवी ने घूंसा मारकर उसको चूर-चूर कर दिया ॥१४॥ तब असुर ने चण्डिका पर गदा चलाई, देवी ने त्रिशूल के द्वारा उसको

तोड़कर भस्म कर दिया ॥१५॥ तब परशू हाथ में ले निशुम्भ देवी पर झपटा, उस को आते देख देवी ने उसको बाणों की वर्षा कर भूमि पर गिरा दिया ॥१६॥ बहुत पराक्रम वाले

यान्तं समालोक्य देवी शंखमवादयत् । ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम् ॥ १९ ॥ पूरयामास ककुभो निजघण्टा स्वनेन च । समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ॥ २० ॥ ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः । पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश ॥ २१ ॥ ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत् । कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः

निशुम्भ के भूमि में गिरने पर शुम्भ अत्यन्त क्रुद्ध होकर अम्बिका को मारने चला ॥१७॥ वे रथ में बैठ बड़े २ अस्त्रशस्त्र को धारण कर अपनी बलवती आठों भुजाओं को सारे

आकाश में फैलाकर युद्ध करने को चला ॥१८॥ उसको आते देख देवी ने शंख बजाया, और अत्यन्त असह्य धनुष की प्रत्यंचा की टंकार की ॥१९॥ दैत्यों की सेना का तेज नष्ट करने वाले

॥ २२ ॥ अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह । तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ ॥ २३ ॥ दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा । तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः ॥ २४ ॥ शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा । आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥ २५ ॥ सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् । निर्घातनिःस्वनो घोरो

घण्टे के शब्द ने सारी दिशाओं को भर दिया ॥२०॥ इस के उपरान्त सिंह ने मस्त हाथियों के मद को दूर करने वाले अपने महानाद से आकाश, दिशाओं और उपदिशाओं को भर

दिया ॥२१॥ काली ने आकाश की ओर उछलकर दोनों हाथ पृथ्वी पर मारे जिस से इतना महान् शब्द उत्पन्न हुआ कि पहले शब्द उस में छिप गये ॥२२॥ शिवदूती ने भयंकर अट्टहास का शब्द किया इन शब्दों से असुरों की सेना डर गई जिससे शुम्भ बड़ा क्रोधित हुआ

जितवानवनीपते ॥ २६ ॥ शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् । चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ २७ ॥ ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम् । स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह ॥ २८ ॥ ततो निशुम्भः

॥२३॥ जब अम्बिका ने शुम्भ से कहा कि, दुष्ट 'ठहर' तब आकाश से देवों ने जय का शब्द उच्चारण किया ॥२४॥ शुम्भ ने अग्नि के समान चमकती हुई भीषण शक्ति छोड़ी उसको आती देख देवी ने महोल्का द्वारा काट दिया ॥२५॥ शुम्भ ने सिंह के समान गरजना की जो तीनों लोक में

हो गई। हे ! राजन् उसी समय मारो मारो का इतना प्रबल शब्द हुआ कि जिसने पहले शब्द को दबा दिया ॥२६॥ शुम्भ के छोड़े हुए सैंकड़ों हजारों शस्त्रों को देवी ने तथा देवी के छोड़े

सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः। आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ॥ २९ ॥ पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः। चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् ॥ ३० ॥ ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी। चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान् ॥३१॥ ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डि-

हुओं को शुम्भ ने काट डाला ॥२७॥ तब चण्डिका ने युद्ध होकर उस पर शूल का प्रहार किया उससे वह मूर्छित हो भूमि पर गिर पड़ा ॥२८॥ इतने में निशुम्भ सचेत हो गया और शस्त्र ग्रहण कर काली देवी और सिंह पर प्रहार किये ॥२९॥ फिर अपनी दस हजार भुजायें

बनाकर सब भुजाओं से चक्र चला देवी को ढाँप दिया ॥३०॥ इस पर विपत्तियों के नाश करने वाली दुर्गा ने क्रुद्ध होकर अपने बाणों से सब चक्रों को काट दिया ॥३१॥ तब निशुम्भ शीघ्र के साथ गदा लेकर दैत्य सेना से घिरा हुआ चण्डिका को मारने झपटा

काम्। अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृतः ॥ ३२ ॥ तस्या-पतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका। खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे ॥ ३३ ॥ शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भमम-

॥३२॥ आती हुई गदा को ही चण्डिका देवी ने अपनी पैनी खड्ग से काट दिया। इस पर असुर ने शूल उठाया ॥३३॥ देवों को कष्ट देने वाले निशुम्भ को शूल हाथ में लिए हुए आता देख चण्डिका ने फुरती से अपना शूल उसकी छाती में मारा ॥३४॥ शूल की चोट से छाती फटने पर अत्यन्त वीर्य और बल से युक्त दूसरा पुरुष चण्डिका से ठहर ऐसे कहता हुआ

निकल पड़ा ॥३५॥ उसके निकलते ही हँसते हुए खड्ग से देवी ने उसका शिर काट डाला और वह भूमि पर जा पड़ा ॥३६॥ इसके पश्चात् सिंह अपने दांतों से असुरों के शिर

रार्दनम् । हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ॥ ३४ ॥ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतो ऽपरः । महाबलो महा-वीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् ॥ ३५ ॥ तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः । शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततो ऽसावपतद्भुवि ॥ ३६ ॥ ततःसिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् । असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान् ॥ ३७ ॥ कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः

व होठों को चबाने लगा और दूसरी ओर काली व शिवदूती भी भक्षण करने लगी ॥३७॥ कौमारी की शक्ति ने अनेक असुरों को नष्ट कर दिया तथा ब्रह्माणी ने मन्त्र पढ़ जल के

द्वारा असुरों को मारा ॥३८॥ माहेश्वरी की त्रिशूल द्वारा बहुत असुर पृथ्वी पर जा पड़े उधर वाराही ने अपनी तु... चूर्ण कर भूमि पर गिरा दिया ॥३९॥ वैष्णवी ने चक्र के द्वारा दानवों

केचिन्नेशुर्महासुराः । ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥ ३८ ॥ माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे । वाराहीतुण्ड-घातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि ॥ ३९ ॥ खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाःकृताः । वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे ॥ ४० ॥ केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात् । भक्षिताश्चापरे काली शिवदूती मृगाधिपैः ॐ ॥ ४१ ॥

के टुकड़े किए और एन्द्री ने वज्र से बहुतों को समाप्त किया ॥४०॥ कितने ही असुर ...

में मरे, कितने ही युद्ध के भय से मरे, कुछ काली, सिंह और शिवदूती ने भक्षण किये ॥४१॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ उवाच २ । श्लो० ३१ । एवम् ४१ । एवमादितः ५४३ ॥

अथ दशमोऽध्यायः

अथ ध्यानम्

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्निनेत्रां धनुश्शरयुतांकुशपाशशूलम् । रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम् ॥ १० ॥

जो अपने सुन्दर हाथों में धनुष, अङ्कुश, पाश और शूल धारण किए हुए है और सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि जिस के तीन नेत्र हैं । जिस ने मस्तक पर अर्द्ध चन्द्र धारण किया हुआ है उस शिवशक्ति भगवती कामेश्वरी का मैं हृदय में ध्यान करता हूं ॥१०॥

ऋषि बोले ॥१॥ राजन् ! प्राणों से प्रिय भाई निशुम्भ को सेना सहित मरा देखकर शुम्भ

ने कुपित होकर कहा॥२॥दुष्टदुर्गे! तू बल के अभिमान में आकर झूठमूठ का घमंड दिखा दूसरों के बल का सहारा लेकर लड़ती है और अभिमान करती है॥३॥ देवी बोली॥४॥ ओ दुष्ट!

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम् । हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥ २ ॥ बलावलेपाद्दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह । अन्यासां बलमाश्रित्य युद्ध्यसे यातिमानिनी ॥ ३ ॥ देव्युवाच ॥ ४ ॥ एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा । पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥ ५ ॥ ततःसमस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखालयम् ।

मैं एक ही हूँ! इस संसार में मेरे सिवा दूसरी कौन है। यह सब मेरी तो विभूतियाँ हैं, अतः मुझ में ही प्रवेश करती है॥५॥ इस पर ब्रह्मणी से लेकर सभी देवियां उसके शरीर में लीन हो गई और

अकेली अम्बिका रह गई ॥६॥ देवी बोली ॥७॥ अब तक मैं अपनी ऐश्वर्य-शक्ति से अनेक रूपों में खडी थी। उन रूपों को समेट कर इस समय मैं अकेली खड़ी हूँ अतः स्थिर हो जाओ ॥८॥

तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका ॥ ६ ॥ देव्युवाच ॥ ७ ॥ अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदा स्थिता । तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥ ८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ९ ॥ ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः । पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् ॥ १० ॥ शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः । तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयंकरम्

ऋषि बोले ॥६॥ तदनन्तर देवी और शुम्भ का देवों और असुरों के सामने भयंकर युद्ध होने लगा ॥१०॥ बाणों तथा दूसरे अस्त्र शस्त्रों के द्वारा दोनों के बीच सारे संसार में भय उत्पन्न

करने वाला युद्ध हुआ ॥११॥ जो सैंकड़ों दिव्य अस्त्र अम्बिका ने चलाये शुम्भ ने अपने अस्त्रों से उन्हें काट दिया ॥१२॥ और जिन दिव्य अस्त्रों को असुरों ने छोड़ा परमेश्वरी ने अपनी लीला

करम् ॥ ११ ॥ दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका । बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥ १२ ॥ मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी । बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः ॥ १३ ॥ ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः । सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥ १४ ॥ छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे । चिच्छेद देवि

से भयङ्कर हुंकार शब्द के उच्चारण आदि करके तोड़ डाला ॥१३॥ इस पर असुर ने सैंकड़ों बाण छोड़कर देवी को आच्छादित कर दिया। क्रोध में भरी हुई उस देवी ने भी बाण मार कर उसका

धनुष काट दिया ॥१४॥ धनुष कट जाने पर शुम्भ ने शक्ति उठाई किन्तु देवी ने चक्र से उसके हाथ में स्थित शक्ति को भी काट दिया ॥१५॥ तब दैत्यों का अधिपति शुम्भ चमकती हुई ढाल

चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् ॥ १५ ॥ ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत् । अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ॥ १६ ॥ तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका । धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् ॥ १७ ॥ हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः । जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः ॥ १८ ॥ चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः

तलवार लेकर देवी की ओर झपटा ॥१६॥ चण्डिका ने उसके आते ही धनुष से बाण तोड़ा, उसकी ढाल और सूर्य के समान चमकती हुई तलवार को भी काट डाला ॥१७॥ घोड़ों व सारथी के

मरने और धनुष के कटने पर शुम्भ मुद्गर लेकर अम्बिका को मारने को उद्यत हुआ ॥१८॥ इस प्रकार आते हुए असुर की मुद्गर को देवी ने अपने तीक्ष्ण बाणों से काट

शरैः। तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥ ११ ॥ स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः। देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत् ॥२०॥ तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले। स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥ २१ ॥ उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः। तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चंडिका ॥ २२ ॥ नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम् ।

दिया। इस पर वह वेग से घोंसा तान कर दौड़ा ॥१९॥ और हृदय पर जा मारा, देवी ने उसकी छाती पर भी थप्पड़ मारा ॥२०॥ थप्पड़ की चोट से व्यथित होकर वह दैत्यराज

भूमि पर जा पड़ा परन्तु तुरन्त उठ खड़ा हुआ ॥२१॥ और देवी को उठा आकाश की ओर उछल गया, चण्डिका ने आकाश में निराधार होते हुए भी उससे युद्ध किया ॥२२॥

चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥ २३ ॥ ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह। उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥ २४ ॥ स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया ॥ २५ ॥ तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्। जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥ २६ ॥ स गतासुःपपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः।

आकाश में चण्डिका और शुम्भ ने आपस में, सिद्ध तथा मुनियों को चकित करने वाला युद्ध किया ऐसा युद्ध पहले न हुआ था ॥२३॥ अम्बिका ने असुर के साथ देर तक युद्ध

करके ऊपर को उठा घुमाकर भूतल पर फैंक दिया ॥२४॥ वह दुष्ट असुर फेंका हुआ भूमि पर गिर कर घूंसा तान वेग से चण्डिका को मारने की इच्छा से दौड़ा ॥२५॥ असुरराज

चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥ २७ ॥ ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि । जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः ॥ २८ ॥ उत्पातमेघाःसोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः । सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते ॥ २९ ॥ ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः । बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः ॥ ३० ॥ अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरो-

को आता देख देवी ने शूल से उसकी छाती तोड़ भूमि में गिरा दिया ॥२६॥ देवी के शूल से घायल हो असुर प्राण छोड़ भूमि पर जा पड़ा उसके गिरने से पृथ्वी, समुद्र तथा पर्वत

आदि हिल गए ॥२७॥ उस दुष्ट असुर के मरने पर सारे संसार को प्रसन्नता हुई और आकाश निर्मल हो गया ॥२८॥ असुर के गिरने पर जो मेघ के तथा उल्कापात आदि उत्पात हुए वह सब शांत हो गए और नदियाँ मार्ग में बहने लगीं ॥२६॥ असुर के मरने पर सब देवी तथा गन्धर्वों को अत्यन्त प्रसन्नता हुई ॥३०॥ बाजे बजाये गए, अप्सरायें नाचने लगीं, शुद्ध वायु चली तथा सूर्यकी प्रभा अत्यन्त सुन्दर हो गई ॥३१॥ यज्ञ की अग्नियां फिर प्रज्वलित होनेलगीं और असुरके भयसे जो हाहाकार मचा हुआ था सब दिशाओंसे शांत हो गया॥३२॥

गणाः । ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥ ३१ ॥
जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्तादिग्जनितस्वनाः ॐ ॥ ३२ ॥
इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ उवाच ४ । अर्ध १ । श्लो० २७ । एवम् ३२ । एवमादितः ॥ ५७५ ॥

अथ एकादशोऽध्यायः

अथ ध्यानम्

बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥ ११ ॥

जिसके हाथों में वरद, अङ्कुश, पाश और उभय मुद्रा शोभा पा रही है। जिसके मुख पर सदा मुसकान रहती है। जिस के स्तन उभरे हुए हैं और जिसके तीन नेत्र हैं, जिसके मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है और जिसके अङ्गों की शोभा प्रभात काल के सूर्य के सदृश है। मैं उस भुवनेश्वरी देवी का ध्यान करता हूं ॥११॥

ऋषि बोले ॥१॥ देवी के द्वारा महासुर के मारे जाने पर इन्द्र और अग्नि के साथ सब देवता इष्ट फल प्राप्त होने से प्रसन्न मुख हो सब दिशायों को प्रकाशित करते हुए कात्यायनी

की स्तुति करने लगे ॥२॥ हे शरणागतों के कष्ट निवारण करने वाली देवि ! प्रसन्न हो, सारे संसार की माता ! प्रसन्न हो, हे संसार की ईश्वरि ! प्रसन्न हो और संसार की रक्षा

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम् । कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्विकाशिव-क्त्राब्जविकाशिताशाः ॥ २ ॥ देवि प्रपन्नार्त्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य । प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ ३ ॥ आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि । अपां स्वरूपा स्थितया त्वयैतदाप्यायते

करो तुम चराचर की ईश्वरी हो ॥३॥ जगत की एक मात्र आधार तुम हो क्योंकि तुम ही पृथ्वी रूप धारण कर स्थित हो, तथा हे अनुपम शक्ति से युक्त देवि ! जल रूप हो कर तुम

ही सारे जगत को व्याप्त कर रही हो ॥४॥ हे देवि ! तुम अनन्त वीर्यवाली, विष्णु की शक्ति तथा विश्व को उत्पन्न करने वाली सर्वोपरि माया हो, तुमने इस सारे संसार को मोह में

कृत्स्नमलंघ्यवीर्ये ॥ ४ ॥ त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमा सिमाया । संमोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥ ५ ॥ विद्याः समस्तास्तव देवी भेदाः ॒स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु । त्वयैकया पूरितमम्बयैतत् का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः ॥ ६ ॥ सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्ति-

फँसाया हुआ है जब तुम प्रसन्न होती हो तब ही मुक्ति मिलती है ॥५॥ हे देवि सारी विद्यायें तथा संसार की सम्पूर्ण स्त्रियें तुम्हारे ही विभाग हैं, तुम से ही यह संसार पूर्ण है, हे अम्बे, तुम्हारी क्या स्तुति हो सकती है, तुम स्तुति से परे हो ॥६॥ हे देवि तुम सब में विद्यमान

हो स्वर्ग व मुक्ति के देने वाली हो, प्राणी किन शब्दों से तुम्हारी स्तुति करें ॥७॥ तुम बुद्धि रूप से सब प्राणियों के हृदय में निवास करती हो तथा स्वर्ग और मोक्ष के देने वाली

प्रदायिनी । त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥ ७ ॥ *सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते । स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ ८ ॥ कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदा-यिनि । विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ९ ॥

नारायणी देवी हो, तुम्हें नमस्कार है ॥८॥ हे नारायणि ! विश्व का संहार करने के लिए तुम ही क्षण, मुहूर्त आदि का रूप होकर हर वस्तु में परिणाम (परिवर्तन) की ओर लेजाने वाली हो, तुम्हें नमस्कार है ॥९॥ हे मंगल स्वरूपिणि ! तुम सब मंगलों को देने वाली हो, हे शिवे ! सब

* इस मन्त्रसे हवन में पायसादि की आहुति देनी प्रारम्भ करनी चाहिये और २६ श्लोक तक देते रहना चाहिये।

प्रयोजनों को सिद्ध करने वाली, शरणागत वत्सला, तीन नेत्रों वाली एवं नारायणी हो, तुम्हें नमस्कार हो ॥१०॥ संसार के धारण और नाश करने के लिए तुम ही आदि शक्ति

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ १० ॥ सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि । गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ११ ॥ शरणागतदीनार्तपरित्राण परायणे । सर्वस्यार्त्तहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १२ ॥ हंसयुक्त विमानस्थे

हो, हे नारायणी ! हे गुणाश्रय तथा गुण मय ! तुम्हें नमस्कार है ॥११॥ शरण में आए हुए दीनों तथा पीड़ितों की रक्षा करने वाली तथा सबकी पीडा को दूर करने वाली नारायणि देवि ! तुम्हें नमस्कार है ॥१२॥ ब्रह्माणी का रूप धारण कर हंसयुक्त विमान में बैठने वाली, कुशा जल

छिड़कने वाली नारायणि देवि तुम्हें नमस्कार है।१३।हे माहेश्वरी का रूप धारण करने वाला त्रि-शूल चक्र और सर्प धारण करने वाली तथा महा वृषभ पर चढ़ने वाली नारायणि देवि तुम्हें

ब्रह्माणी रूपधारिणि । कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ १३ ॥ त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि । माहे-श्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १४ ॥ मयूर कुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे । कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमो-ऽस्तु ते ॥ १५ ॥ शंखचक्रगदाशारंगगृहीतपरमायुधे । प्रसीद

नमस्कार है ॥१४॥ हे कौमारी का रूप धर हंस पर चढ़ने और महाशक्ति को धारण करने वाली पाप रहित नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है ॥१५॥ हे वैष्णवी रूप में शंख, चक्र, गदा, शार्ङ्ग नामक उत्तम आयुधों को धारण करने वाली नारायणि देवि तम प्रसन्न होओ, तुम्हें नमस्कार

है ॥१६॥ हे वाराह रूप धारण कर उग्र महाचक्र हाथ में ले, दाढ़ों पर से पृथ्वी को उठाने वाली नारायणि देवि तुम्हें नमस्कार है ॥१७॥ उग्र नृसिंह रूप धारण कर असुरों का वध करने

वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १६ ॥ गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे । वाराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १७ ॥ नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे । त्रैलोक्य-त्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १८ ॥ किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले । वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १९ ॥ शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले । घोररूपे महारावे

वाली तथा त्रिलोकी की रक्षा करने वाली नारायणि देवि तुम्हें नमस्कार है ॥१८॥ किरीटधारण कर, महावज्र लिए, हजारों आंखों से दीप्त, वृत्रासुर के प्राणों को हरने वाली इन्द्रा शक्तिरूपा

नारायणी देवी को हमारा नमस्कार है ।।१६।। अत्यन्त बल स्वरूपा शिवदूती के रूप में दैत्यों का नाश करने वाली तथा भयंकर शब्द करने वाली नारायणी, तुम्हें नमस्कार है ।।२०।। बड़े

नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २० ॥ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमाला विभूषणे । चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २१ ॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे । महारात्रि महाविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२२॥ मेधे सरस्वती वरे भूति बाभ्रवि तामसि । नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२३॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते । भयेभ्य-

बड़े दाँतों वाली, मुण्डों की माला से शोभित, मुण्ड को मारने वाली चामुण्डे, नारयणी, तुम्हें नमस्कार है ।।२१।। लक्ष्मी, लज्जा, महाविद्या, श्रद्धा, पुष्टि, स्वधा, ध्रुवा, महारात्रि महा-

विद्या, सर्व रूपा नारायणी ! तुम्हें नमस्कार है ॥२२॥ सरस्वती, वरा (श्रेष्ठा), भूति (ऐश्वर्यरूपा) बाभ्रवी (पार्वती) तामसी (महाकाली), नियता (संयमपरायणा) तथा ईशा (सब की

स्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥२४॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रय भूषितम् । पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥२५॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् । त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालिनमोऽस्तु ते ॥२६॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् । सा घराटा

(अधीश्वरी) रूपिणी देवी तुमको नमस्कार है।२३। हे सब स्वरूप धारण करने वाली सबकी स्वामिनि सब शक्तियों से युक्त दुर्गे देवि ! हमारी भय से रक्षा करो, तुम्हें नमस्कार है ॥२४॥ हे कात्यायनि तुम्हारी तीन आँखों से विभूषित यह सौम्य मुख हमें सब कष्टों से बचावे, तुम्हें नमस्कार है ॥२५॥

भद्रकालि ! ज्वाला के समान भयङ्कर, अत्यन्त उग्र, समस्त असुरों का नाश करने वाला तुम्हारा त्रिशूल हमारी भय से रक्षा करे। तुम्हें नमस्कार है ॥२६॥ अपनी ध्वनी से सारे जगत

पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥२७॥ असुरासृग्वसा-पङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः । शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥२८॥ *रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान् । त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ २९ ॥ एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्विषां देवी महासुराणाम् । रूपैरनेकैर्बहुधात्ममूर्तिं

को पूरित कर असुरों के तेज को नष्ट करने वाला तुम्हारा घण्टा हम लोगों की सब पापों से पुत्रों के समान रक्षा करे ॥२७॥ हे चण्डिके ! असुरों के रक्त और चर्बी के कीचड़ से चर्चित

---

* इस मन्त्र से हवन में 'गलो' की आहुति दें ।

हुआ तुम्हारा खड्ग हमारे कल्याण के लिए हो, हम तुम्हें नमस्कार करते हैं ॥२८॥ हे देवि ! तुम प्रसन्न होकर सम्पूर्ण रोगों को नष्ट कर देती हो तथा रुष्ट होकर सारी अभीष्ट कामनाओं को नाश कर देती हो, तुम्हारे आश्रित मनुष्यों को कभी कष्ट नहीं होता किन्तु वह दूसरों को आश्रय देने योग्य होते हैं ॥२९॥ हे अम्बिके ! अपने आप को अनेक स्वरूपों में स्थिर कर जो इस समय

कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या ॥ ३० ॥ विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या । ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥ ३१ ॥ रक्षांसि यत्रो-

धर्मद्रोही महासुरों का तुमने नाश किया है ऐसा कार्य अन्य कौन कर सकता है ॥३०॥ सारी विद्याओं, शास्त्रों ज्ञानआदि दीपक तथा आदि वाक्य अर्थात् वेदों के होते हुए महाअन्धकार रूपी ममता के गड्ढे में इस संसार को तुम्हारे बिना कौन घुमा सकता

है ॥३१॥ जहां राक्षस, जहां भयंकर विष वाले सर्प, जहां शत्रु तथा डाकू चोर हैं जहां दावा-
नल हैं और समुद्र के बीच स्थित होकर तुम प्राणियों की रक्षा करती हो ॥३२॥ हे विश्व
की स्वामिनि ! तू सारे विश्व की रक्षा करती है, विश्व में व्याप्त होकर सबको धारण कर रही
हो, तुम ब्रह्मा, विष्णु आदि विश्वेश्वरों से बन्दना की जाती हो। हे देवि ! जो तेरी भक्ति

अविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र । दावानलो यत्र
तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥ ३२ ॥
विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति

करते हैं वह सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने योग्य होते हैं ॥३३॥ हे देवि ! प्रसन्न होओ और सदा
शत्रु भय से हमारी रक्षा करो जैसे असुरों का वधकर आपने हमारी रक्षा की है इसी प्रकार सारे
जगत के पापों तथा उत्पातों के द्वारा उत्पन्न हमारी आदि उपद्रवों को शीघ्र शांत करो ॥३४॥ हे
विश्व की पीड़ा के हरण करने वाली देवि ! अपने सन्मुख विनम्र पुरुषों पर प्रसन्न होओ, हे

त्रिलोकी से स्तुति योग्य देवि ! तम लोगों को वर देने वाली हो ॥३५॥ देवी बोली ॥३६॥ हे देवताओ ! मैं वर देने को तैयार हूं। जो इच्छा हो संसार के हित के लिए वर मांगो मैं दूंगी ॥३७॥

विश्वम् । विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥ ३३ ॥ देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः । पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ॥ ३४ ॥ प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि । त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां

देवता बोले ॥३८॥ हे सब की स्वामिनि ! त्रिलोकी की समस्त बाधाओं को शांत करने वाला काम जैसा कि तुम ने अब किया है इसी प्रकार हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो ॥३९॥ देवी बोली ॥४०॥ वैवस्वत मन्वन्तर के अट्ठाइसवें युग में दोनों शुम्भ और निशुम्भ महासुर

फिर उत्पन्न होंगे॥४१॥तब मैं नन्द गोप के घर में यशोदा के गर्भ से अवतीर्ण होकर और विन्ध्याचल निवासिनी होकर उन दोनों का नाश करूंगी॥४२॥फिर पृथ्वी पर अत्यन्त रुद्र रूप धारण

वरदा भव ॥ ३५ ॥ देव्युवाच ॥ ३६ ॥ वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ । तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् ॥ ३७ ॥ देवा ऊचुः ॥ ३८ ॥ *सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि । एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ ३९ ॥ देव्युवाच ॥ ४० ॥ वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतितमे युगे । शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥ ४१ ॥ +नन्दगोपगृहे जाता

कर वैप्रचित्त नामक असुरों का वध करूंगी ॥४३॥ उन उग्र वैप्रचित्र असुरों का भक्षण करने

*इस मन्त्रसे हवन में काली मिर्चों की आहुति देवें। +इस मन्त्र से हवन में मक्खन और मिश्री की आहुति देवें।

से अनार के पुष्पों के समान दांत लाल हो जायेंगे ॥४४॥ इस पर स्वर्ग में देवता और भूमि पर मनुष्य मेरी स्तुति करते हुए सदा रक्त दन्तिका नाम से पुकारेंगे ॥४५॥ फिर सौ वर्ष तक

यशोदा गर्भसम्भवा । ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ॥ ४२ ॥ पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले । अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् ॥ ४३ ॥ *भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान् । रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमी कुसुमोपमाः ॥ ४४ ॥ ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः । स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् ॥ ४५ ॥ भूयश्च

वर्षा न होने के अवसर पर जब मुनि मेरी स्तुति करेंगे तो मैं गर्भ के बिना ही उत्पन्न होऊँगी ॥४६॥ उस समय सौ नेत्रों से मैं मुनियों को देखूँगी इसलिए मनुष्य मुझे

शताक्षी नाम से पुकारेंगे ॥४७॥ उस समय वर्षा होने तक मैं सारे संसार की अपने देह से प्राण धारक शाकों को उत्पन्न कर पालना करूँगी ।४८॥ इस संसार में मेरा नाम शाक-

शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि । मुनिभिः संस्तुता भूमौ संभविष्याम्ययोनिजा ॥ ४६ ॥ ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन् । कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ॥ ४७ ॥ ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः । भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टैः प्राणधारकैः ॥ ४८ ॥ *शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि । तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महा-

म्भरी प्रसिद्ध होगा और वहाँ ही दुर्ग नाम से महासुर का वध करूँगी ॥४६॥ इससे मेरा

*इस मन्त्र से हवन में 'अनार के फूलो' की आहुति देवें

नाम दुर्गा देवी विख्यात होगा फिर जब मैं भयंकर रूप धारण कर हिमालय पर ॥५०॥ मुनियों की रक्षा के लिए राक्षसों का भक्षण करूंगी तब सारे मुनि नम्र होकर मेरी स्तुति

सुरम् ॥ ४१ ॥ दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥ ५० ॥ रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात् । तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः ॥ ५१ ॥ भीमादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति । यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥ ५२ ॥ तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वा संख्येयषट्पदम् । त्रैलोक्यस्य

करेंगे ॥५१॥ उस पर मेरा नाम, 'भीमा देवी' प्रसिद्ध होगा और जब अरुण नामक राक्षस सारी त्रिलोकी में उपद्रव मचायेगा ॥५२॥ तब मैं असंख्य भ्रमरों का रूप धारण कर त्रिलोकी

के हित के लिए उस महासुर का वध करूंगी ॥५३॥ तब मेरी भ्रामरी नाम से संसार के सब

हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम् ॥ ५३ ॥ भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः । इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥ ५४ ॥ तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥ ॐ ॥ ५५ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्याः स्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ उवाच ४ । अर्ध श्लो० १ । श्लो० ५० । एवम् ५५ । एवमादितः ॥ ६३० ॥

मनुष्य स्तुति करेंगे, इस तरह जब जब असुरों के द्वारा उत्पात होंगे तब तब मैं उत्पन्न होकर शत्रुओं का नाश करूंगी ॥५५॥

अथ द्वादशोऽध्यायः

अथ ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेट विलसद्धस्ताभिरासेविताम् । हस्तैश्च-
क्रगदासिखेट विशिखांश्चापं गुणां तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां
शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥ १२ ॥

जिस के अंगों की प्रभा बिजली के सदृश है, जो सिंह के ऊपर बैठी हुई भयंकर प्रतीत होती है। जिसके हाथों में तलवार और ढाल है और अनेक कन्यायें जिस की सेवा में खड़ी हैं। जो अपने हाथ में चक्र, गदा, तलवार, ढाल, बाण, धनुष, पाश और तर्जनी मुद्रा धारण किये हुये

है और जिसका स्वरूप अग्निमय है तथा जिस के मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है उस तीन नेत्रों वाली दुर्गा देवी का मैं ध्यान करता हूं ॥१२॥

ॐ देव्युवाच ॥ १ ॥ एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः । तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् ॥ २ ॥ मधुकैटभनाशं च महिषासुर घातनम् । कीर्तयिष्यन्ति ये

देवी बोली ॥१॥ जो मनुष्य एकाग्र मन से इन मन्त्रों द्वारा नित्य स्तुति करेगा उसकी सारी बाधाओं को मैं अवश्य दूर करूँगी ॥२॥ मधु कैटभ के नाश, महिषासुर का घात तथा शुम्भ निशुम्भ के संहार के प्रसङ्ग का जो मनुष्य पाठ करेंगे ॥३॥ तथा अष्टमी, चतुर्दशी और नवमी को जो एकाग्र मन से मेरे माहात्म्य को भक्ति-पूर्वक सुनेंगे ॥४॥ उनके पाप और पाप-जन्य आपत्तियें सब निर्मूल होंगी और दरिद्रता तथा प्रियजनों का वियोग भी उन के यहां न होगा ॥५॥ ऐसे पुरुषों को शत्रु, चोर-डाकू, राजा, शस्त्र, अग्नि और जल से कभी डर न

होगा ॥६॥ इस लिए मेरे इस माहात्म्य को एकाग्र मन से भक्ति-पूर्वक पढ़ना और सुनना चाहिए, यह परम कल्याण करने वाला है ॥७॥ यह मेरा माहात्म्य महामारी से उत्पन्न समस्त उप-

तद्वद् वधं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ३ ॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः । श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहा-त्म्यमुत्तमम् ॥ ४ ॥ न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः । भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम् ॥ ५ ॥ शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः । न शस्त्रानलतोयौघात्कदा चित्सम्भविष्यति ॥ ६ ॥ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समा-

द्रवों तथा तीनों प्रकार के सन्तापों को शान्त करता है ॥८॥ जिस घर में नित्य-प्रति मेरे माहात्म्य का पाठ होता है उस घर को मैं कभी न त्यागूंगी और उसके समीप बास करूंगी ॥९॥

बलिदान, पूजा, होम तथा महोत्सव आदि में मेरा यह चरित्र पढ़ना और सुनना चाहिए ।।१०।।
ज्ञान पूर्वक अथवा अज्ञान से जो भी बलि, पूजा तथा होम किया जाता है मैं उसी

हितैः । श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत् ॥७॥
*उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् । तथा त्रिविधमुत्पातं
माहात्म्यं शमयेन्मम ॥ ८ ॥ यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने
मम । सदा न तद्विमोक्ष्यामि सान्निध्यं तत्र मे स्थितम् ॥ ९ ॥
बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे । सर्वं ममैतच्चरित-

को प्रीति पूर्वक ग्रहण करती हूँ ।।११।। शरद ऋतु में जो प्रति वर्ष महा पूजा की जाती है
उस में मेरा यह माहात्म्य भक्ति पूर्वक सुनने से मनुष्य सब बाधाओं से मुक्त तथा मेरे अनुग्रह

*इस मन्त्र से हवन में शाक की आहुति देवें ।

से धन धान्य और पुत्र पौत्र से सम्पन्न होता है इस में सन्देह नहीं ॥१२-१३॥ मेरा यह माहात्म्य और कल्याणकारी जन्म तथा युद्ध में मेरे पराक्रम सुन कर मनुष्य निर्भय होता है ॥१४॥ शत्रुओं

मुच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥ १० ॥ जानताऽजानता वापि बलिपूजां तथा कृताम् । प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम् ॥ ११ ॥ शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी । तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥ १२ ॥ *सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः । मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥ १३ ॥ श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः । पराक्रमं

का नाश होता है और कल्याण की प्राप्ति होती है तथा मेरा माहात्म्य सुनने वालों का

---

*इस मन्त्र से नीम की आहुति देवें ।

कुल प्रसन्न रहता है ॥१५॥ सर्वत्र शान्ति कर्म में, बुरे स्वप्न देखने पर, ग्रह पीड़ा होने पर मेरा माहात्म्य सुनना चाहिये ॥१६॥ इससे सब विघ्न व पीड़ा शांत जायेंगी और बुरे

च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ॥ १४ ॥ रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते । नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृणवताम् ॥ १५ ॥ शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने । ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ॥ १६ ॥ *उपसर्गाः शमं यान्तिग्रहपीडाश्च दारुणाः । दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्न-मुपजायते ॥ १७ ॥ +बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम् ।

स्वप्न नष्ट हो कर अच्छे स्वप्न आयेंगे ॥१७॥ यह माहात्म्य बाल ग्रह से पीड़ित बच्चों के

*इस मन्त्र से मोती की आहुति देवें ।

लिए शांतिदायक तथा मनुष्य के परस्पर के विरोध मिटाकर मैत्रीभाव उत्पन्न करता है ॥१८॥ सब दुराचारी मनुष्यों के बल का हरने वाला तथा राक्षस, भूत और पिशाचों को इसके पढ़ने से

संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम् ॥ १८ ॥ दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम । रक्षो भूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् ॥ १९ ॥ *सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम् । पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥ २० ॥ †विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम् । अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या ॥ २१ ॥ प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन्सकृत्सुचरिते

ही नष्ट करता है ॥१९॥ मेरा यह माहात्म्य मनुष्य को मेरे समीप लाता है। पशु पुष्प, अर्घ्य

*इस मन्त्र से बालछड़ की आहुति देवें। †इस मन्त्र से सरसों की आहुति देवें।

धूप, गन्ध, दीप, ब्राह्मणभोजन, होम, रात दिन अभिषेक तथा अनेक प्रकार के भोग देने से जो वर्ष भर तक मेरी प्रीति के लिए किया जाता है वह झट माहात्म्य के पढ़ने और सुनने से

श्रुते। श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति ॥ २२ ॥ रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम । युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम् ॥२३॥ तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते । युष्माभिःस्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥ २४ ॥ ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम् । अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्नि परिवारितः ॥ २५ ॥ दस्युभिर्वा

शीघ्र प्राप्त होता है ॥२१-२२॥ मेरे जन्मों की कथा भूतों से रक्षा करती है, दुष्ट दैत्यों का नाश करने वाला युद्ध सम्बन्धी मेरा चरित्र ॥२३॥ सुनने से मनुष्य का शत्रु भय नष्ट होता

है। तुम्हारे से तथा ब्रह्मर्षियों से की गई स्तुतियें ॥२३॥ और ब्रह्मा से की हुई स्तुति शुभ मति प्रदान करती है। वन में दावाग्नि से घिरा हुआ ॥२५॥ निर्जन स्थान में चारों से घिरा हुआ

वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः । सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः ॥ २६ ॥ राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्ध गतोऽपि वा । आघूर्णितो वा वातेन स्थितःपोते महार्णवे ॥ २७ ॥ पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे । सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥ २८ ॥ स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात् । मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥ २९ ॥

तथा शत्रुओं से पकड़ा हुआ, वन में सिंह, व्याघ्र अथवा जंगली हाथियों के फन्दे में फँसा हुआ ॥२६॥ क्रुद्ध हुए राजा के आदेश से पकड़ा हुआ या फांसी पर चढ़ने वाला, लू लगने

पर तथा महा सागर में छोटी सी नौका पर बैठा हुआ ॥२७॥ भयङ्कर युद्ध में तीक्ष्ण शस्त्रों का प्रहार होने पर अथवा समस्त घोर बाधाओं तथा कष्टों से पीड़ित होकर भी ॥२८॥मेरे इस चरित्र

दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम ॥ ३० ॥ ऋषिरुवाच ॥ ३१ ॥ इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा ॥ ३२ ॥ पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत । तेऽपि देवा निरातंका स्वाधिकारान्यथा पुरा ॥ ३३ ॥ यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः । दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ॥ ३४ ॥ जगद्विध्वं-

का स्मरण करके मनुष्य संकट से मुक्त हो जाता है,मेरे प्रभाव से सिंह आदि तथा चोर और शत्रु ॥२९॥ मेरे चरित्र का स्मरण करने वाले पुरुष से दूर भाग जाते हैं ॥३०॥ ऋषि बोले ॥ यों कहकर तीव्र पराक्रम से युक्त वह भगवती चण्डिका ॥३२॥ सब देवों के देखते हुए वहाँ

ही अन्तर्ध्यान होगई, देवता भी निर्भय हो पूर्ववत् अपने अपने अधिकारों को प्राप्त कर ॥३३॥ सब शत्रुओं के नष्ट होने से यज्ञभाग लेने लगे, देवी द्वारा युद्ध में महासुर शुभ के मरने

सिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे । निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः ॥ ३५ ॥ एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः । सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥ ३६ ॥ तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते । सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति ॥ ३७ ॥ व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं

पर ॥३४॥ अत्यन्त पराक्रमी, उग्र, जगत का नाश वाले, अतिबलवान् निशुम्भ के मरने पर शेष राक्षस पाताल को चले गये॥३५॥हे राजन् इस तरह वह भगवती देवी बार बार प्रकट होकर

संसार की रक्षा करती है ॥३६॥ वह संसार को मोह में फांसती और वह ही उत्पन्न करती है, वह ही याचना करने पर सन्तुष्ट हो कर विज्ञान व ऋद्धि प्रदान करती है ॥३७॥ हे राजन् !

मनुजेश्वर , महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया ॥ ३८ ॥ सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा । स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥ ३९ ॥ भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे । सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोप जायते ॥ ४० ॥ *स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा । ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे तथा शुभाम् ॥ ॐ ॥ ४१ ॥

प्रलयकाल में महामारी का रूप धारण करने वाली महाकाली से यह सारा ब्रह्माण्ड व्याप्त है ॥३८॥ वह प्रलय के समय महामारी और उत्पत्ति के समय सृष्टि करती है और पालन के

---

*इस मन्त्र से खस, सफेदचन्दन कर्पूर की आहुति देवें ।

समय प्राणियों की स्थिति का कारण होती है ॥३९॥ वह वहां उन्नति के समय गृह में लक्ष्मी के रूपमें मनुष्योंको वृद्धिप्रद होती हैं और अभाव में दरिद्रता बनकर लक्ष्मी का नाश करती है।४०। धूप, गंध आदि से पूजने तथा स्तुति करने पर धन और पुत्र तथा धर्म में बुद्धि प्रदान करती है।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये फलस्तुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ उवाच २ । अर्धश्लोकौ २ । श्लो० ३७ । एवम् ४१ एवमादितः ॥ ६७१ ॥

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

अथ ध्यानम्

ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशांकुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे ॥ १३ ॥

जिस की चार भुजाएँ और तीन नेत्र हैं तथा जो अपने हाथों में पाश, अङ्कुश, वर एवं अभय की मुद्रा धारण किये रहती है और जो उदय काल के सूर्य मण्डल की सी कान्ति वाली है, मैं शिवा देवी का ध्यान करता हूं ।

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ।
एवं प्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत् ॥ २ ॥ विद्या तथैव

ऋषि बोले ॥१॥ हे राजन् यह देवी का सर्वोपरि माहात्म्य तुमसे कहा, इतना प्रभाव रखने वाली यह देवी है, जो इस संसार को धारण करती है ॥ २ ॥ यह देवी ही जो

क्रियते भगवद्विष्णुमायया । तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ॥ ३ ॥ मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे । तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥ ४ ॥ आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा ॥ ५ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ६ ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥ ७ ॥ प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम् । निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥ ८ ॥

भगवान् विष्णु की माया है विद्या ज्ञान उत्पन्न करती है उसी के द्वारा तुम, यह वैश्य, तथा अन्य विचारशील पुरुष ॥३॥ मोह में फँसते हैं, फँस रहे हैं और भविष्य में भी मोह जाल में फँसेंगे,

इसलिये हे राजन्! तुम उस परमेश्वरी की शरण में जाओ ॥४॥ वहही देवी मनुष्यों को आराधना करने पर भोग, स्वर्ग तथा मुक्ति प्रदान करती है ॥५॥ मार्कण्डेय ऋषि बोले ॥६॥ मेधा ऋषि

जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने । संदर्शनार्थमम्भाया नदीपुलिन संस्थितः ॥ ९ ॥ स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् । तौ तस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमीयम् ॥ १० ॥ *अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः । निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥ ११ ॥ ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम् । एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥ १२ ॥

के इस प्रकार वचन सुन राजा सुरथ उस प्रशंसनीय व्रती ऋषि को प्रणाम कर राज्य हरण और ममता से विरक्त होकर ॥८॥ हे महामुने! तत्काल तप करने चला गया और वह वैश्य देवी

---

*इस मन्त्र के साथ पुष्प और धूप की आहुति देवें।

के दर्शनों के लिये नदी के किनारे चला गया ॥९॥ उस वैश्य ने देवी के परम सूक्त का जप करते हुए तप किया, राजा और वैश्य दोनों नदी के किनारे देवी की मिट्टी की मूर्ति बनाकर ॥१०॥ पुष्प, धूप और होम आदि से नियमित आहार से रह कर पुनः निराहार रह कर देवी में एकाग्र हो मन लगा पूजा करने लगे ॥११॥ तथा दोनों ने अपने शरीर के रक्त से सींचकर

परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ॥ १३ ॥ देव्युवाच ॥१४॥ यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन । मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ॥ १५ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ १६ ॥ ततो

बलि दी। इस तरह संयम से तीन वर्ष तक आराधना करने पर ॥१२॥ जगत् को धारण करने वाली देवी सुन्तुष्ट हो प्रत्यक्ष होकर बोली ॥१३॥ देवी बोली ॥१४॥ हे राजन् ! तथा हे वैश्य, मैं प्रसन्न होकर कहती हूं कि तुम जो चाहो मांगो मैं वह ही दूँगी। १५॥ मार्कण्डेय ऋषि बोले ॥१६॥ देवी से ऐसा सुन राजा सुरथ ने कहा कि मैं अगले जन्म में अखण्ड

राज्य प्राप्त करूँ तथा इस जन्म में भी बल पूर्वक शत्रुओं को नष्ट कर अपना राज्य प्राप्त करूँ ॥१७॥ वैश्य ने विरक्त हो यह मेरा है, यह मैं हूं इस प्रकार के संग को नष्ट करने वाला

वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि । अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ॥ १७ ॥ सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः । ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम् ॥ १८ ॥ देव्युवाच ॥ १९ ॥ स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भगवान् ॥ २० ॥ हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति ॥ २१ ॥ मृतश्च भूयः संप्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ॥ २२ ॥ सावर्णिको नाम मनु

तत्त्व ज्ञान मांगा ॥१८॥ देवी बोली ॥१९॥ राजन्, थोड़े ही दिनों में तुम अपने राज्य को प्राप्त करोगे ॥२०॥ अपने शत्रुओं को मार कर अखण्ड राज्य भोगोगे ॥२१॥ और मरने के

पश्चात् सूर्य भगवान् से जन्म लेकर ॥२२॥ सावर्णि मनु के नाम से संसार में प्रसिद्धि पाओगे ॥२३॥ हे वैश्य श्रेष्ठ ! तूने जो वर मुझ से मांगा है वह ही मैं तुम्हें देती हूँ तुम्हें मोक्ष को

भवान् भुवि भविष्यति ॥ २३ ॥ वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तो ऽभिवांछितः ॥ २४ ॥ तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति ॥ २५ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ २६ ॥ इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम् ॥ २७ ॥ बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता । एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ २८ ॥ सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॐ ॥ २९ ॥

प्राप्त कराने वाला ज्ञान मिलेगा ॥२४-२५॥ मार्कण्डेय ऋषि बोले ॥२६॥ दोनों को इस प्रकार उनकी इच्छानुसार वर देकर तथा दोनों के स्तुति करने पर देवी तत्क्षण अन्तर्धान

हो गई ॥२७॥ इस प्रकार देवी से वर पाकर क्षत्रियों में श्रेष्ठ राजा सुरथ सूर्य से जन्म प्राप्त कर सावर्णि मुनि होंगे ॥२८-२९॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ उवाच ६ । अर्ध० श्लोकाः ११ । श्लो० १२ । एवम्० २९ । एवमादितः ७०० । समस्ता उवाच मंत्राः ५७ । अर्ध० श्लोकाः ४२ । श्लो० ५३५ । अवदानानि ६६ ।

अथ नवार्णमन्त्र जपविधिः

इस प्रकार सप्तशती का पाठ पूरा होने पर पहले नवार्णजप करके फिर देवी सूक्त का पाठ करना चाहिये।

नीचे लिखे विनियोग को पढ़कर जल गिराए।

श्री गणपतिर्जयति। ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मा-विष्णुरुद्रा ऋषयःगायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि श्री महाकाली, महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी, महासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

॥ अथ ऋष्यादिन्यासः ॥

नीचे लिखे न्यास वाक्यों में से एक एक का उच्चारण करके दाहिने हाथ की अंगुलियों से क्रमशः शिर, मुख, हृदय, गुदा, दोनों चरण और नाभि का स्पर्श करे।

ॐ ब्रह्माविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि ॥ ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे। श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमः, हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इति मूलेन करौ संशोध्य*। ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं

*इस से हाथों की शुद्धि करके न्यास करे।

मध्यमाभ्यां नमः । ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः । ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर दाहिने हाथों की पाचों अंगुलियों से हृदय आदि अङ्गों का स्पर्श करे

॥ अथ हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥

ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ क्लीं शिखायै वषट् । ॐ चामुण्डायै कवचाय‡ हुम् । ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय* फट् ।

‡दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कंधे को और बायें हाथ की अंगुलियों से दायें कंधे को एक साथ स्पर्श करे।

*दाहिने हाथ को शिर के ऊपर से बाईं ओर से पीछे की ओर ले जाकर दाहिनी ओर से आगे ले जाए और तर्जनी तथा मध्यमा अंगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजाये ।

न्यू स्टैण्डर्ड पब्लिकेशन्स दिल्ली-

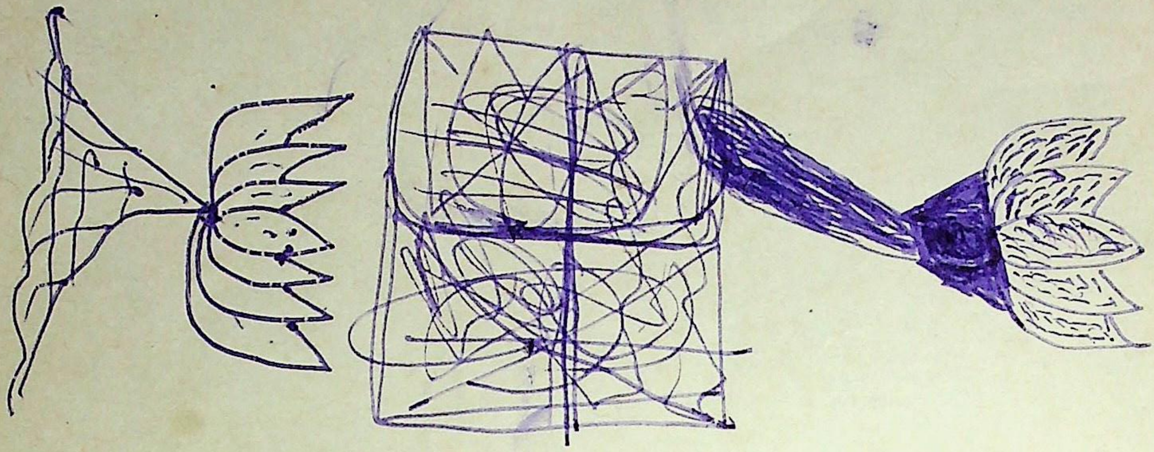

अथ बीजन्यासः

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर क्रमशः शिखा आदि का दाहिने हाथ की पांचों अंगुलियों से स्पर्श करे।

ॐ ऐं नमः, शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे॥ ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे। ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णो। ॐ मुं नमः वामकर्णो। ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे। ॐ यैं नमः वामनासापुटे। ॐ विं नमः, मुखे। ॐ च्चैं नमः गुह्ये।

अथ व्यापक न्यासः

प्रत्येक दिशा में चुटकी बजाते हुए न्यास करे।

ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै

नमः । ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः । ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः । ॐ क्लीं वायव्यै नमः । ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः । ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः ।

॥ अथ ध्यानम् ॥

खड्गं चक्र गदेषुचाप परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग भूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुकैटभम् ॥ १ ॥

मधु और कैटभ को मरने के लिए ब्रह्मा जी ने ऐसी देवी का स्तवन किया था जिसने दस हाथों में खड्ग, चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिघ, शूल, भुशुण्डि, मस्तक और शङ्ख धारण किये हैं उनके

अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां ।
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ॥
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां । सेवे
सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २ ॥ घण्टा
शूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं । हस्ताब्जैर्दधतीं

तीन नेत्र हैं। जिसके समस्त अङ्गों में दिव्य भूषण विभूषित हैं। जिसके शरीर की कांति नील-मणि के समान है तथा वे दस मुख और दस पैरों से युक्त है।१। मैं कमलासन पर बैठी हुई प्रसन्न मुखवाली महिषासुर मर्दिनी महालक्ष्मी का भजन करता हूं, जो अपने हाथ में अक्षमाला

घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥ ३ ॥

फरसा, गदा, बाण, वज्र, पद्म, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, खड्ग, ढाल, शंखी, घण्टा, मधुपात्र शूल, पाश और चक्र धारण करती हैं ॥२॥ जिनके हाथों में घण्टा, शूल, हल, शंख, मूसल, चक्र, धनुष और बाण हैं और शरद ऋतु के शोभा सम्पन्न चन्द्रमा के समान मनोहर जिनकी कान्ति है, जो तीनों लोकों की आधारभूता और शुम्भादि दैत्यों को नाश करने वाली हैं तथा गौरी के शरीर से जो प्रकट हुई हैं, मैं उन महासरस्वती देवी का भजन करता हूं ॥३॥

॥ अथ माला पूजनम् ॥

नीचे लिखे मन्त्र से माला की पूजा करे।

ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः

नीचे लिखे मन्त्र से प्रार्थना करे।

ॐ मां माले महामाये सर्व शक्ति स्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थ प्रसीद मम सिद्धये ॥

नीचे लिखे मन्त्र से दाहिने हाथ में माला को ग्रहण करके मन्त्र के देवता सविता का ध्यान करता हुआ हृदय में नवार्ण मन्त्र का १०८ बार जप करे।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धि देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धि परिकल्पय मे स्वाहा।

अर्थात हे महामाये ! सर्व शक्ति रूप धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तेरे ही अधीन हैं इससे मुझे सिद्धि की दाता हो।

इस प्रकार प्रार्थना करके जप आरम्भ करे।

नवार्ण मन्त्र

ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर देवी के वाम हस्त में निवेदन करे।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

तत्पश्चात् फिर नीचे लिखे अनुसार न्यास करे।

करन्यासः

ओं ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ओं चं तर्जनीभ्यां नमः।
ओं डिं मध्यमाभ्यां नमः। ओं कां अनामिकाभ्यां नमः।
ओं यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ओं ह्रीं चण्डिकायै करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यासः

ओं खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शङ्खिनी चापिनी बाण भुशुण्डी परिघायुधा ॥ हृदयाय नमः ।
ओं शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टा स्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ शिरसे स्वाहा ॥ ओं प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे । भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ शिखायै वषट् ॥ ओं सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
यानि चात्यर्थ घोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ कवचाय हुम् ॥

ओं खड्ग शूल गदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके । करपल्लव सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ओं सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥ अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

की नियन्ता,उपासकों को धन देने वाली,साक्षात्कार के योग्य,पर ब्रह्म को अपृथक् रूपमें जानने वाली पूज्य देवताओं की अग्रगण्या मैं हूं, मैं प्रपञ्च रूप से विविधस्थितियों में स्थित हूं। सर्व भूत मेरा अधिष्ठान है। सब देवता हर व्यवस्था में सब कुछ मेरे लिए करते हैं ॥३॥ भोक्त शक्ति होने के कारण सब अन्नादि मेरी शक्ति से खाते हैं, प्राणीमात्र मेरी शक्ति से ही देखते, सांस लेते तथा कही बात को सुनते हैं। मुझे इस रूप में न जानने वाले मनुष्य ही दुःख के भाजन तथा अवनति को प्राप्त होते हैं। हे वहुश्रुत! मैं तुम्हें श्रद्धा से प्राप्य ब्रह्म तत्त्व का उपदेश करती हूं, सुनो ॥४॥ मैं देवता और मनुष्यों द्वारा सेवित इस दुर्लभ तत्त्व का वर्णन करती हूं। जिस २ पुरुष को मैं मन से चाहूं उस को सब की अपेक्षा बलशाली बना देती हूं। तथा इसी को सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, परोक्ष ज्ञान से युक्त ऋषि तथा उत्तम मेधा-शक्ति से युक्त बनाती हूं ॥५॥ ब्रह्म शत्रु, हिंसक राक्षसों को मारने के लिये रुद्र के धनुष को चढ़ाती हूं। शरणागत प्राणियों के रक्षणार्थ शत्रुओं से युद्ध करने वाली मैं हूं,। तथा अन्तर्ध्यान रूप से पृथ्वी और आकाश को व्याप्त मैं ही करती हूं ॥६॥ मैं ही संसार के

जनक रूप आकाश को सर्वोपरि सर्वाधिष्ठान स्वरूप परमात्मा के ऊपर उत्पन्न करती हूं। सागर में तथा ज़ल में मेरे कारण (कारण स्वरूप चैतन्य ब्रह्म) की स्थिति है, अत एव मैं सर्वत्र व्याप्त हूं तथा उस स्वर्ग लोक का स्पर्श भी अपने शरीर से करती हूं ॥७॥ कारण रूप से जब सम्पूर्ण संसार की रचना आरम्भ करती हूं, तब किसी की प्रेरणा के बिना स्वयमेव पवन की भांति चलती हूं। अर्थात् स्वच्छन्द कार्य में संतान होती हूं। मैं पृथ्वी और आकाश से परे हूं। मैं अपनी शक्ति से ऐसी बन गई हूं ॥८॥

अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ १ ॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौय

*इस का अर्थ पञ्चमाध्याय में देखें।

धात्र्यै नमोनमः । ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ २ ॥ कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमोनमः । नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥३॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै । ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥४॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमोनमः । नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमोनमः ॥ ५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६ ॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥७॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ८ ॥ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

॥९॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥१०॥ या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥११॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१२॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१३॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु जाति रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१५॥ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिाता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै

नमस्तस्यै नमो नमः ॥१७॥ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १८॥ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २० ॥ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २१ ॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २२ ॥ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २३ ॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै

नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता ! नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २६ ॥ इंद्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या । भूतेषु सततं तस्यै व्याप्ति देव्यै नमो नमः ॥ २७ ॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २८ ॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता । करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ २९ ॥ या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ३० ॥

। इति तन्त्रोक्तं देवीसूक्तं समाप्तम्

***

अथ प्राधानिकं रहस्यम्

॥ राजोवाच ॥

भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदितः । एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन्प्रधानं वक्तुमर्हसि ॥ १ ॥ आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज । विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे ॥ २ ॥

राजा बोला। हे भगवन् ! आपने चण्डिका के अवतारों का वर्णन तो कर दिया अब उन का मुख्य स्वरूप भी कहिये ॥१॥ हे महाराज ! मुझे देवी के जिस स्वरूप की और जिस विधि से आराधना करनी चाहिये वह सब मुझ विनीत से कहिये ॥२॥

ऋषि बोले ! यह रहस्य परमगोपनीय है। परन्तु तू भक्त है इसलिये तुमसे इसको कहता हूं ॥ ३ ॥ सब की आदि कारण, सत्व, रज, तम तीन गुणों वाली महा लक्ष्मी परमेश्वरी

ऋषिरुवाच

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते । भक्तोऽसीति न मे किंचित्तवावाच्यं नराधिप ॥ ३ ॥ सर्वस्याद्या महालक्ष्मी स्त्रिगुणा परमेश्वरी । लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्यकृत्स्नं व्यवस्थिता ॥ ४ ॥ मातुलिङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रति । नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्द्धनि ॥ ५ ॥ तप्तकाञ्च-

लक्ष्य (स्थूल) अलक्ष्य (सूक्ष्म) रूपों वाली सारे संसार में व्याप्त हो रही है ॥४॥ हे राजन् वह हाथों में मातुलिंग, गदा, खेट तथा पात्र और शिर पर नाग लिंग और योनि धारण

किए हुए है ॥ ५॥ तपाये हुए सुवर्ण के समान उसकी कान्ति है और तपाए हुए सोनेके ही आभूषण धारण कर रही है तथा अपने तेज से सारा आकाश परिपूर्ण कर रही है ॥ ३॥ उस परमेश्वरी ने सम्पूर्ण

नवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा । शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥ ६ ॥ शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी । बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि ॥ ७ ॥ सा भिन्नाञ्जन-संकाशा दंष्ट्रांकितवरानना । विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा ॥ ८ ॥ खड्ग पात्रशिरः खेटैरलंकृतचतुर्भुजा । कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणाऽहिशिरःस्रजम् ॥ ९ ॥

जगत् को शून्य देख कर केवल तमोगुण रूप से एक अन्य रूप धारण किया ॥७॥ वह काजल के रंगके समान कान्तिमान्, बड़े दांतों से युक्त मुख वाली, विशाल नेत्र तथा मध्यम शरीर की स्त्री हुई ॥८॥

ढाल, तलवार पात्र और कटे हुए शरीर से शोभित, चार भुजावाली और कबन्ध (धड़) काहारतथा मुण्डों की माला धारण किये हुए थी ॥९॥ उस उत्तम तामसी देवी ने महालक्ष्मी को नमस्कार करके कहा कि मेरा नाम तथा कर्म मुझे बताओ ॥१०॥ महालक्ष्मी ने उस उत्तम तामसी से कहा कि मैं

सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमाम् । नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः ॥ १० ॥ तां प्रोवाच महालक्ष्मी स्तामसीं प्रमदोत्तमाम् । ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते ॥ ११ ॥ महामाया महाकली महामारी क्षुधा तृषा । निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया ॥ १२ ॥

तुम्हें नाम प्रदान करती हूं और तुम्हारे कार्य भी बतलाती हू ॥११॥ महामाया, महाकाली, महामारी क्षुधा, तृषा, निद्रा, तृष्णा, एकवीरा, कालरात्री और दुरत्यया ॥ १२ ॥ यह तुम्हारे नाम, हैं, जो कर्म अनुसार हैं। जो मनुष्य इन नामों से तुम्हारे कर्मों को जानकर पाठ करता है वह

सुख भोगता है ॥१३॥ उससे ऐसा कह कर महालक्ष्मी ने दूसरा रूप अत्यन्त शुद्ध सत्त्व गुण से चन्द्रमा के समान तेजवान धारण किया ॥१४॥ वह श्रेष्ठ नारी अक्षमाला, अंकुश, वीणा

इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः । एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम् ॥ १३ ॥ तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप । सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ ॥ १४ ॥ अक्षमालांकुशधरा वीणा-पुस्तक धारिणी । सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ ॥ १५ ॥ महाविद्या महावाणी भारती वाक्सरस्वती ।

तथा पुस्तक धारण किए हुए थी, महालक्ष्मी ने उसे भी नाम प्रदान किया ॥१५॥ महाविद्या, महावाणी, भारती, वाक्, सरस्वती, आर्या, ब्राह्मी, कामधेनु, वेदगर्भा, धीश्वरी

॥१६॥ नाम रखकर महालक्ष्मी ने महाकाली और सरस्वती से कहा-कि हे देवियो-तुम दोनों अपने अपने गुणों के योग्य स्त्री और पुरुष के जोड़े उत्पन्न करो ॥१७॥ यह कहकर महालक्ष्मीने

आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा चा धीश्वरी ॥ १६ ॥ अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम् । युवा जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः ॥ १७ ॥ इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम् । हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ ॥ १८ ॥ ब्रह्मन्विधे विरञ्चेति धातरित्याह तं नरम् । श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियाम् ॥ १९ ॥

स्वयं कमल के आसनपर विराजमान सुन्दर तथा प्रकाशमान स्त्री पुरुषका जोड़ा उत्पन्न किया ॥१८॥ उस पुरुष को ब्रह्मन्, विधे, वरंच तथा धातः कहकर सम्बोधित किया तथा उस स्त्री को श्री, पद्मे,

लक्ष्मी, माता कहा ॥१६॥ महाकाली सरस्वती ने भी स्त्री-पुरुष के जोड़े उत्पन्न किये । जिनके नाम और रूप भी तुमसे कहता हूं ॥२०॥ महाकाली ने नील कण्ठ, लाल भुजा, श्वेतशरीर

महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह । एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते ॥ २० ॥ नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम् । जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम् ॥ २१ ॥ स रुद्रः शङ्करः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलो-चनः । त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा ॥ २२ ॥ सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णां च पुरुषं नृप । जनयामास

तथा मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट धारण किये पुरुष कों और गौर वर्ण स्त्री को उत्पन्न किया ॥२१॥ वह पुरुष रुद्र, शंकर स्थाणु, कपर्दी त्रिलोचन के नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा स्त्री, के त्रयी विद्या, कामतेनु

भाषा, अक्षरा और स्वरा यह नाम रखे ॥२२॥ राजन्! सरस्वती ने गौर वर्ण स्त्री तथा श्याम रंग के पुरुष को प्रकट किया। उनके नाम भी मैं तुझ से कहता हूं ॥२३॥ विष्णु, कृष्ण, हृषिकेश,

नामानि तयोरपि वदामि ते ॥ २३ ॥ विष्णुः कृष्णो हृषी-
केशो वासुदेवो जनार्दनः । उमा गौरी सती चण्डी
सुन्दरी सुभगा शिवा ॥ २४ ॥ एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं
प्रपेदिरे । चक्षुष्मन्तोऽनुपश्यन्ति नेतरे तद्विदो जनाः ॥ २५ ॥
ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम् । रुद्राय गौरीं
वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥ २६ ॥ स्वरया सह संभूय

वासुदेव और जनार्दन पुरुष के तथा उमा, गौरी, सती, चण्डी, सुन्दरी, सुभगा, शिवा स्त्री के नाम रखे ॥२४॥ इस प्रकार वह तीनों स्त्रियां तत्काल पुरुषत्व को प्राप्त हो गई, ज्ञान नेत्र

वाले पुरुष ही इस रहस्य को जानते हैं दूसरे जन नहीं ॥२५॥ हे राजन् ! महालक्ष्मी ने त्रयी विद्या रूपा सरस्वती को ब्रह्मा के लिये रुद्र को वर देने वाली गौरी और वासुदेव को लक्ष्मी पत्नी रूप में दी

विरञ्चोऽण्डमजीजनत् । बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान् ॥ २७ ॥ अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्नृप । महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥ २८ ॥ पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः । संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः ॥ २९ ॥ महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी । निराकारा च साकारा सैव नाना-

।२६। ब्रह्मा ने स्वरा के साथ मिलकर ब्रह्माण्ड उत्पन्न किया और शक्तिशाली भगवान् रुद्र ने गौरी के साथ मिलकर उसका भेदन किया ।।२७। हे राजन् ! संसार में चर अचर महाभूतात्म जो भी कार्य

हुआ वह सब इसी ब्रह्माण्ड से उत्पन्न हुआ ।२८। विष्णु लक्ष्मी के साथ उसको पालन और पोषण करते हैं और महादेव गौरी के साथ सारे जगत् का संहार करते हैं ॥२६॥ हे महाराजा-महालक्ष्मी ही सर्व सत्वमयी और ईश्वरीय है । वह निराकार भी है और साकार भी तथा अनेक

भिधानभृत् ॥ ३० ॥ नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित् ॥ ॐ ॥ ३१ ॥

नामों से पुकारी जाती है ॥३०॥ महालक्ष्मी का वर्णन तथा ज्ञान इन नामों द्वारा ही होता है अन्य किसी साधन से नहीं ॥३१॥

॥ इति प्राधानिकं रहस्यं सम्पूर्णम् ॥

अथ वैकृतिकं रहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता । सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते ॥ १ ॥ योग निद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा । मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्ट-

ऋषि बोले । हमने जो तीन गुण वाली तामसी देवी तथा तीन भेद से सात्विकी देवी कही वे ही शर्वा, चण्डिका, दुर्गा, भद्रा और भगवती नाम से कहाती हैं ॥१॥ तमोगुणवाली महाकाली विष्णु भगवान् की योगनिद्रा कही जाती है जिस की स्तुति ब्रह्मा ने मधुकैटभ के नाश के लिए की थी ॥२॥ जो दश मुख, दश भुजायें, दश पैर तथा काजल समान वर्णवाली विशाल

तीस नेत्रों की माला से शोभायमान है ।३।। जिसके देदीप्यमान दांत और दाढ़ तथा भयंकर रूप वह महालक्ष्मी में रूप सौभाग्य और कांति की प्रतिष्ठा से हो कर स्थित है ।।४।। खड्ग

वाम्बुजासनः ॥ २ ॥ दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जन-प्रभा । विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया ॥ ३ ॥ स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप । रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः ॥ ४ ॥ खड्गबाणगदाशूल चक्रशंख भुशुण्डि भृत् । परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ ॥ ५ ॥ एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया । आराधिता

बाण, गदा, शूल, शंख, चक्र, भुशुण्डी, परिघ, धनुष और रुधिर टपकता हुआ शिर धारण करती है ।।५।। यह दूरत्या महाकाली भगवान् विष्णु की माया है जो प्रसन्न होकर चराचर

जगत् को उपासक के वश में कर देती है ।।६।। जो सब देवों के शरीर से प्रकट हुई यह अनुपम कांति वाली त्रिगुणा महालक्ष्मी साक्षात् महिष मर्दिनी है ।।७।। जिस के श्वेत

वशीकुर्यात्पूजाकर्तुश्चराचरम् ॥ ६ ॥ सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽविर्भूताऽमितप्रभा । त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥ ७ ॥ श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला । रक्तमध्या रक्तपादा नीलजंघोरुरुन्मदा ॥ ८ ॥ सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा । चित्रानुलेपना कांतिरूपसौभाग्यशालिनी ॥ ९ ॥ अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ।

मुख, नील भुजा, श्वेत स्तन मण्डल, रक्त पैर, नीली जंघा, उत्कट मद-पिण्डली वाली ।।८।। चित्र विचित्र जघन वाली तथा चित्र विचित्र माला, वस्त्र और आभूषण धारण

करती है जो विचित्र अनुलेपन से युक्त तथा कांतिरूप और सौभाग्य शीला है ॥९॥ वह पूजन करने योग्य सती अठारह भुजा वाली और सहस्र भुजा वाली है आगे क्रम से उस के दायें बायें हाथों के शस्त्रों का वर्णन करते हैं ॥१०॥ अक्षमाला, कमल, बाण, तलवार, बज्र,

आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधः करक्रमात् ॥ १० ॥ अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा । चक्रं त्रिशूलं परशुः शंखो घण्टा च पाशकः ॥ ११ ॥ शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम् ॥ १२ ॥ सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप । पूजयेत्सर्व-

गदा, चक्र, त्रिशूल, परशु, शंख, घण्टा फांसी ॥११॥ शक्ति, दण्ड, ढाल, धनुष, पान, पात्र, कमण्डलु, इन आयुधों से अलकृत भुजाओं वाली कमलासन पर विराजमान हैं ॥१२॥ इस सर्व देव मयी ईश्वरी महालक्ष्मी की जो मनुष्य पूजा करता है वह सब मनुष्यों और देवों का

स्वामी होता है ॥१३॥ जो गौरी के देह से उत्पन्न हुई तथा केवल सतो गुण के आश्रय करती है वह शुम्भासुर को मारने वाली साक्षात् सरस्वती है ॥१४॥ हे राजन्! वह अपनी

लोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत् ॥ १३ ॥ गौरीदेहात्समुद्भुता या सत्त्वैकगुणाश्रया । साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुर-निवर्हिणी ॥ १४ ॥ दधौ चाष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत् । शंखं घण्टां च लाङ्गूलं कार्मुकं वसुधाधिप ॥ १५ ॥ एषा संपूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति । निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ १६ ॥ इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां

आठ भुजाओं में बाण मुसल, शूल, चक्र, शंख, घण्टा हल तथा धनुष धारण करती है ॥१५॥ यह शुम्भ और निशुम्भ को मारने वाली भक्ति पूर्वक करने पर सर्वज्ञ बना देती

है ॥१६॥ हे राजन् ! देवी के ये स्वरूप तुझ से कहे अब जगन्माता की और इनकी उपासना अलग अलग सुनिये ॥१७॥ जब लक्ष्मी का पूजन करे तो दक्षिण और उत्तर में क्रम से महाकाली और महा सरस्वती का पूजन करे तथा पीछे की

तव पार्थिव । उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय ॥ १७ ॥
महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती । दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम् ॥ १८ ॥ विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे । वामे लक्ष्म्या हृषिकेशः पुरतो देवतात्र-यम् ॥ १९ ॥ अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना ।

ओर तीनों का पूजन करना चाहिये ॥१८॥ सरस्वती के साथ ब्रह्मा का मध्य में, गौरी के साथ रुद्र का दक्षिण में लक्ष्मी के साथ विष्णु का उत्तर में, और आगे तीनों का पूजन करे ॥१६॥ मध्य में अर्थात् महालक्ष्मी के सन्मुख अष्टादश भुजा वाली लक्ष्मी का, वाम

भाग में दश मुखों वाली महाकाली का तथा दक्षिण भाग में अष्टभुजी महा सरस्वती का पूजन करना चाहिये ।।२०।। हे राजन् ! यदि केवल अष्टादश भुजा वाली महालक्ष्मी का या

दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत् ॥ २० ॥ अष्टादश-भुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप । दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥ २१ ॥ कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्ट-प्रशान्तये । यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ २२ ॥ नवास्याः शक्तयः *पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ । नमो देव्या

दशमुखी काली, का अष्ट भुजी सरस्वती का पूजन करना हो तो ।।२१।। सब अरिष्टों की शान्ति के लिये इनके दक्षिण भाग में काल और उत्तर भाग में मृत्यु का पूजन करना चाहिये और (अष्टभुजी के पूजन की दूसरी विधि) जब शुम्भासुर को मारने वाली अष्टभुजी का पूजन करना हो ।।२२।। तो

*ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, ऐंद्री, शिवदूती तथा चामुण्डा ये नौ शक्तियां हैं।

इसकी नौ शक्तियों का और दक्षिण भाग में रुद्र एवं वाम भाग में गणेश का पूजन करे तथा नमोदेव्यै स्तोत्र से महालक्ष्मी की अराधना करे।२३। देवी के तीन अवतारों के पूजन से उन्हीं अवतारों के

इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत् ॥ २३ ॥ अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः । अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिष-मर्दिनी ॥ २४ ॥ महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती । ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी ॥ २५ ॥ महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः । पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥ २६ ॥ अर्घ्यादिभिरलङ्कारैर्गन्ध पुष्पैस्तथा-

आश्रित स्तोत्र और मन्त्र से पूजा करे, यह अष्टादश भुजी देवी महिष मर्दिनी पूजने योग्य है ॥२४॥ यह ही महालक्ष्मी, महाकाली और महासरस्वती कही जाती है और यह ही पुण्य पापों की स्वामिनी

तथा सारे लोकों की महेश्वरी है ॥२५॥ जिसने महिषासुर के अन्त वाली महालक्ष्मी का पूजन किया है वह ही जगत् का स्वामी है,जगत् के धारण करने वाली तथा भक्तों से प्रेम करने वाली

क्षतैः । धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्य समन्वितैः ॥ २७ ॥ रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप (बलिमांसादि पूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता । तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्वचित् ।) प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना ॥ २८ ॥ सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः । वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम् ॥ २९ ॥ पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया । दक्षिणे पुरतः सिंहं

चण्डिका का पूजन करना चाहिये ॥२६॥ अर्घ्यादि से, आभूषणों से,गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप,

*जो लोग मांस और मदिरा का व्यवहार करते हैं, उन्हीं लोगों के लिए मांस मदिरा द्वारा पूजन का विधान है। अन्य के लिए नहीं।

दीप, नैवेद्य तथा अनेक विध भक्ष्य पदार्थ ।२७। रक्त सिञ्चित मांस की बलि, मदिरा, प्रणाम आचमन चन्दन और सुगन्ध ।।२८।। कपूर सहित पान आदि से भक्ति पूर्वक पूजन करना

ममग्रं धर्ममीश्वरम् ॥ ३० ॥ वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम् । कुर्याच्च स्तवनं धीमाँस्तस्या एकाग्रमानसः ॥ ३१ ॥ ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः । एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह ॥ ३२ ॥ चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात । प्रदक्षिणानमस्कारान्कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥ ३३ ॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः । प्रतिश्लोकं च

चाहिये ।२९। जो देवी से मोक्ष चाहता हो वह देवी के सामने वाम भाग में महिषासुर का पूजन करे और दक्षिणकी ओर देवी के आगे उन के वाहन सिंहका पूजन करे जो सम्पूर्ण धर्मका प्रतीक और चराचर

को धारण करने वाला है बुद्धिमान मनुष्य एकाग्र मन से उसकी स्तुती करे।३०-३१। पुनःहाथ जोड़कर देवी के इन चरित्रों से स्तुति करे, समयाभाव में यदि कोई एकही चरित्र से स्तुति करना चाहे तो केवल मध्यम चरित्र से स्तुति करे,परन्तु प्रथम व उत्तर के चरित्रों में एक से न करे।३२।आधे चरित्र से स्तुति

जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा ॥ ३४ ॥ जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः । भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्सुसमाहितः ॥ ३५ ॥ प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्यारोप्य चात्मनि । सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत ॥ ३६ ॥ एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम् । भुक्त्वा भोगान् यथा

न करे ऐसा करने से जपमें छिद्र हो जाता है हाथ बांध कर नत मस्तक हो प्रदक्षिणा तथा नमस्कार करे इस तरह हाथ जोड़ शिर से नमस्कार करे।३३। जगत् के धारण करने वाली देवी से प्रमोद रहित

धोकर पुनः पुनः क्षमा मांगे,तिल और घी से प्रत्येक श्लोक के द्वारा हवन करे ॥३४॥ अथवा चण्डिका केलिये स्तोत्र के मन्त्रों से पवित्र हविष्य का हवन करे पुनः एकाग्र मनसे नाम और पदों से देवी का पूजनकरे ।३५। फिर निश्चल हो हाथ बांध तथा प्राणों को आत्मा में स्थिर कर बहुत

कामं देवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥ ३७ ॥ यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् । भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्पर. मेश्वरी ॥ ३८ ॥ तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम् । यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि ॥ ३९ ॥

समय तक चण्डिका देवी का ध्यान करता हुआ तन्मय हो जाए ॥३६॥ इस प्रकार जो भक्ति भाव से प्रतिदिन परमेश्वरी का पूजन करता है वह यथेष्ट कामनाओं को भोग कर देवी के सायुज्य को पाता है ॥३७। जो मनुष्य भक्त वत्सला चण्डिका की नित्य पूजा नहीं करता

परमेश्वरी उसके पुण्यों को जलाकर भस्म कर देती है ॥३८॥ इसलिये हे राजन्! सब लोकों की महेश्वरी चण्डिका देवी का कथित विधि के अनुसार पूजन करो इससे सुख मिलेगा ॥३९॥

॥ इति वैकृतिकं रहस्यं सम्पूर्णम् ॥

अथ मूर्त्तिरहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा । स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ १ ॥ कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा । देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तम-भूषणा ॥ २ ॥ कमलांकुशपाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा । इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्रीरुक्माम्बुजासना ॥ ३ ॥ या रक्तदन्तिका

ऋषि बोले—नन्दा भगवती जिसका नाम है जो नन्द से उत्पन्न होगी, उनकी स्तुति और पूजा करने से तीनों लोक वश में हो जाते हैं ॥१॥ उसकी सुवर्ण के समान उत्तम कांति,

सुवर्ण के समान सुन्दर वस्त्र तथा वर्ण और सुवर्ण के समान उत्तम आभूषण हैं ॥२॥ उसकी चारों भुजा में कमल, अंकुश, पाश और शंख सुशोभित हैं और इन्दिरा, कमला,

नाम देवी प्रोक्ता मयानघ । तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम् ॥ ४ ॥ रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा । रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा ॥ ५ ॥ रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका । पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजे ज्जनम् ॥ ६ ॥ वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी । दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ ॥ ७ ॥ कर्कशीवतिकान्तौ

लक्ष्मी, श्री रुक्मा, कमलासना उसके नाम हैं ॥३॥ हे निष्पाप राजन् ! मैं ने जो रक्त दन्तिका देवी का वर्णन किया है उसका सब भयों के हरने वाला रूप कहता हूं,

सुनो ॥४॥ वस्त्र रक्त, वर्ण रक्त, सब अंगों के आभूषण रक्त, आयुध रक्त, केश रक्त, अत्यन्त भयकर ॥५॥ तीक्ष्ण तथा रक्तनख, रक्तदांत वाली रक्तदन्तिका देवी पति की

तौ सर्वानन्दपयोनिधी । भक्तान् सम्पादयेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ ॥ ८ ॥ खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा । आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ॥ ९ ॥ अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम् । इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम् ॥ १० ॥ (भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवी सायुज्यमाप्नुयात् ।) अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुः स्तवम् । तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रिय-

सुश्रूषा करने वाली नारी के समान भक्तों के अनुकूल रहती है ॥६॥ वह पृथ्वी के समान विशाल है सुमेरु के समान उसके दोनों स्तन हैं जो बहुत लम्बे, बहुत स्थूल और अत्यन्त

मनोहर हैं ॥७॥ वे बड़े, कान्तिमान् और सर्वानन्द के समुद्र हैं। देवी अपने भक्तों को सब कामनाओं के दुहने वाले स्तन पिलाती है ॥८॥ खड्ग, पात्र, मुसल और हल धारण करती है, यह देवी रक्त चामुण्डा और योगेश्वरी कही जाती है ॥९॥ इससे चराचर सारा संसार व्यापक है जो इसकी भक्तिभाव से पूजा करता है वह चराचर में व्याप्त होता है ॥१०॥

मिवाङ्गना ॥ ११ ॥ शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना । गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी ॥ १२ ॥ सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीन घनस्तनी । मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया ॥ १३ ॥ पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसंचयम् । काम्यानन्तर-

और जो रक्तदन्तिका के शरीर के इस स्तोत्र का नित्य पाठ करता है देवी उसको ऐसा आनन्द रखती है जैसे स्त्री पति को ॥११॥ शाकम्भरी देवी का नीलवर्ण, नीले कमल के समान आंखे, गम्भीर नाभि और त्रिवली से विभूषित सूक्ष्म उदर है ॥१२॥ कठोर, सम,

ऊंचे गोल मोटे और मांसल स्तन हैं, मुष्टि में कमल है जिस पर भौंरे गुँजार कर रहे हैं तथा कमल पर भी विराजमान हैं ॥१३॥ पुष्प, पल्लव, मूल और फल से युक्त है उस के शाक को संग्रह कामना करने योग्य अनेक रसो वाला, क्षुधा, तृषा, मृत्यु और बुढ़ापे को

सैर्युक्तं क्षुत्तृरामृत्युभयापहम् ॥ १४ ॥ कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रति परमेश्वरी । शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ १५ ॥ विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम् । उमा गौरी सती चराडी कालिका सा च पार्वती ॥ १६ ॥ शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् संपूजयन्नमन् । अक्षय्यमश्नुते

दूर करने वाला है ॥१४॥ उस परमेश्वरी ने चमकता हुआ कान्तिमान धनुष धारण किया हुआ है वह शाकम्भरी, शताक्षी और दुर्गा के नाम से पुकारी जाती है ॥१५॥ वही शोक को दूर

करने वाली, दुष्टों का दमन करने वाली तथा विपत्तियों को शांत करने वाली उमा, गौरी सती चण्डी, कालिका और पार्वती है ॥१६॥ शाकम्भरी की स्तुति करने वाला, ध्यान, जप, पूजा और नमस्कार करने वाला शीघ्र ही अक्षय अन्न, पान, अमृत और फल

शीघ्रमन्नपानामृतं फलम् ॥ १७ ॥ भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा । विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा ॥ १८ ॥ चन्द्रहासं च डमरुं शिरः पात्रं च विभूती । एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता ॥ ११ ॥ तेजोमण्डल-दुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत् । चित्रानुलेपना देवी चित्रा-

को प्राप्त करता है ॥१७॥ भीमा देवी भी नील वर्ण है उसके दांत-दाढ़ बड़े सुन्दर हैं, नेत्र विशाल तथा गोल और स्थूल स्तन हैं ॥१८॥ वह खड्ग, डमरू, शिर पात्र धारण किये हुए

है। उसके एकवीरा, कालरात्रि, कामदा, ॥१६॥ तेजोमण्डलदुर्धर्षा, भ्रामरी चित्रकान्ति-भृत, चित्रानुलेपना-चित्राभरणभूषिता, चित्र भ्रमरपाणि, महामारी यह नाम हैं ॥२०॥ हे राजन्

भरणभूषिता ॥ २० ॥ चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते । इत्येता मूर्तयो देव्या याः ख्याता वसुधाधिप ॥ २१ ॥ जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः । इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ॥ २२ ॥ व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम् । तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम् ॥ २३ ॥ सप्तजन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि । पाठमात्रेण

देवी की मूर्तियां यह कही गई हैं ॥२१॥ ये मूर्तियां जगन्माता चण्डिका की कामधेनु कहलाती हैं हे राजन् यह चरित्र परम गुप्त हैं तुम्हें किसी से न कहना चाहिए ॥२२॥ इन दिव्य मूर्तियों

मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्बिषैः ॥ २४ ॥ देव्या ध्यानं मयाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं महत् । तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकाम फलप्रदम् ॥ २५ ॥ (एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि । सर्वरूप मयी देवी सर्वदेवी मयं जगत । अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम् ॥ २६ ॥

...उसका जप करो ॥२३॥ इन मन्त्रों का जप करने से सात जन्मों में एकत्र किये हुए ब्रह्महत्या समान घोर पापों से मनुष्य छूट जाता है ॥२४॥ देवी का यह परम गुह्य ध्यान मैंने तुझ से कहा, इस लिये मनुष्य एकाग्र मन से ध्यान करके यथेष्ट फल को प्राप्त करता है ॥२५॥ उसके प्रसाद से तुम सर्वमान्य हो जाओगे। देव सर्वरूपमयी है तथा सम्पूर्ण जगत् देवीमय है।अतः मैं उन विश्वरूपा परमेश्वरी को नमस्कार करता हूं।

इति मूर्तिरहस्यं सम्पूर्णम्

क्षमा-प्रार्थना

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया । दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरी ॥ १ ॥ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरी ॥ २ ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरी । यत्पूजितं मया देवी परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ३ ॥ सापराधोऽस्मि

परमेश्वरी ! मेरे से रात दिन सहस्र अपराध होते रहते हैं । मुझे अपना दास समझ कर मेरे उन अपराधों को आप कृपा करके क्षमा करो ॥१॥ हे परमेश्वरी ! मैं आवाहन करना नहीं जानता, विसर्जन करना भी नहीं जानता तथा पूजा करने का ढंग भी नहीं जानता, अतः क्षमा करो ॥२॥ हे देवि ! सुरेश्वरी ! मैं मन्त्रहीन, क्रियाहीन और भक्तिहीन हू अतः जैसे भी मैंने

आप का पूजन किया है व आप की कृपा से पूर्ण हो ॥३॥ हे जगदम्बे । मैं अपराधी आप की शरण में आया हूं । इस समय दया का पात्र हूं । तुम जैसे चाहो ॥४॥ देवि ! परमेश्वरी

शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके । इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ४ ॥ अज्ञानाद्विस्मृते भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् । तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरी ॥ ५ ॥ कामेश्वरी जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे । गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥ ६ ॥

अज्ञान से, भूल से अथवा बुद्धिभ्रान्त होने के कारण मैंने जो न्यूनता या अधिकता करदी हो, वह सब क्षमा करो और प्रसन्न होओ ॥५॥ हे सच्चिदानन्द स्वरूपा परमेश्वरी तथा जगन्माता कामेश्वरी ! आप प्रेम पूर्वक मेरी यह पूजा स्वीकार करें और मुझ पर प्रसन्न रहो।

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम ।

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथा । न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥ १ ॥ न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः । अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥२॥ विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत ॥ तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥ जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ॥ तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे कुपुत्रो

जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४॥ पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः
सन्ति सरलाः परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ॥ मदीयोऽयं त्यागः
समुचितमिदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥५॥
परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया, मयापञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि
शरणम् ॥६॥ श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा निरातंको रंको
विहरति चिरं कोटिकनकैः। तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं जनः को
जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥७॥ चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पट-
धरो जटाधारी कंठे भुजगपतिहारी पशुपतिः। कपाली भूतेशो भजति
जगदीशैकपदवीं भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥८॥ नाराधितासि

विधिना विपिधोपचारैः किं लक्ष्यसे तव कृतं न मया वचोभिः। श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥ आपत्सु मग्नः स्मरणां त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि। नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥ जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि। अपराध परम्परावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥ मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि। एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥

इति देव्यपराधक्षमपनस्तोत्रम्

:—:

कुञ्जिका स्तोत्रम्

शिव उवाच । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् । येन मन्त्र-प्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत ॥१॥ न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् । न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न वार्चनम् ॥२॥ कुञ्जिक पाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् । अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥३॥ गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति । मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ॥४॥ पाठमात्रेण संसिद्धयेत् कुञ्जिका स्तोत्रमुत्तमम् ॥ अथ मन्त्रः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । ॐ ग्लौ हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि । नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि । नमस्ते शुंभहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि । जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे । ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका । क्लीं कारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोस्तु ते । चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी ॥ विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि । धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी । क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु । हुं हुं हुंकार रूपिण्यै जं जं जं जम्भ नादिनी भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमोनमः । अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ।

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ।
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे । इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं
मन्त्रजागर्तिहेतवे । अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति । विहीनां
कुञ्जिका देव्या यस्तु सप्तशतीं पठेत् । न तस्य जायते सिद्धिररण्ये
रुदितं यथा ॥

इति श्री रुद्रयामले गौरीतन्त्रे कुञ्जिका स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

उपर्युक्त कुञ्जिका स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करने से सब प्रकार के विघ्न नष्ट हो जाते हैं । इस कुञ्जिका स्तोत्र तथा देवी सूक्त के सहित सप्तशती पाठ के करने से परम सिद्धि प्राप्त होती हैं ।

काम्य प्रयोग विधि

ओं गणाधिपतये नमः

और प्रयोगों के लिए कात्यायनी तन्त्र में कहे हुए नीचे लिखे श्लोकों के आदि और अन्त में प्रणव को लगाकर जाप करने से सिद्धि होती है। नीचे हम कुछ मन्त्रों का उल्लेख करते हैं। अपनी अपनी कामना के अनुसार उन श्लोकों का १०० सम्पुट पाठ करने से कामना की शीघ्र सिद्धि होती है। (व्याहृतियों के साथ सम्पुट करना हो तो श्लोक से पहिले व्याहृती को अनुलोम और श्लोक के अन्त में व्याहृति को विलोम की विधि से पाठ करना चाहिए।)

१. अपमृत्युनिवारण के लिए

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिंपुष्टि वर्धनम् ऊर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्यो मुक्षीय मामृतात्।

२. शूलेनपाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टा स्वनेन न

पाहि चापज्यानिस्वनेन च ।

यदि इस श्लोक से सम्पुट न करें तो केवल इस श्लोक का ही एक लाख जाप करने से अपमृत्यु निवारण होती है ।

३. सर्वकार्य सिद्धि तथा विपत्ति नाश के लिए

शरणागतदीनार्त परित्राण परायणे । सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते । (केवल एक लाख जप करने से भी कार्य सिद्धि हो जाती है ।)

४. बाधा शान्ति के लिए

सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ॥

५. महामारी शान्ति के लिए

इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ।

तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥

६. पाप नाश के लिए

हिनस्ति दैत्य तेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव ॥

७. मोहन के लिये

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवि भगवति हि सा । बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति । (इस मन्त्र का एक लाख जाप करने से और दशांश पायस से हवन करने से शीघ्र सिद्धि होती है ।)

८. रोग नाश के लिये

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥

(केवल पाठ मात्र से भी इस का फल प्राप्त होता है ।)

९. प्रत्येक कार्य सिद्धि के लिये तथा सब प्रकार की विपत्तियों के नाश के लिये ।

देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतो ऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥

इस श्लोक का केवल एक लक्ष जाप करने से और श्लोक के अन्त में दीपक के आगे नमस्कार करने से शीघ्र सिद्धि होती है ।

१० भय नाश के लिये ।

सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ।

११. आरोग्य और सौभाग्य के लिये ।

देहि सौभाग्यमारोयं देहि मे परमं सुखम् ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

१२. बाधा शान्ति के लिए तथा धनपुत्रादि की प्राप्ति के लिए ।

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः ॥
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥

१३. सब प्रकार के कल्याण के लिये ।

सर्वमङ्गल मङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ॥
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

१४. लक्ष्मी प्राप्ति के लिए ।

कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

विपत्ति नाशक दुर्गा का ३२ नामों वाला मन्त्र

दुर्गा दुर्गार्ति शमनी दुर्गापद्विनिवारिणी ।
दुर्गमच्छेदिनि दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी ॥
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा ।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्य लोकदवानला ॥
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी ।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता ॥
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी ।
दुर्गमोहो दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी ॥
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमयुधधारिणी ।

दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी ॥

दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी ।

नामावलिमिमां यस्तु दुर्गया मम मानवः ॥

पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः ॥

जो मनुष्य इस नाम माला का पाठ करता है, वह निस्सन्देह सब प्रकार के भय से मुक्त हो जाता है। इस नाम माला का पुरश्चरण तीस हज़ार का है। पुरश्चरण पूर्वक पाठ करने से कार्यसिद्धि होती है।

नवचण्डयादि प्रयोगः

नवरात्रारम्भ के दिन साधक स्नानादि करके पुर्वाभिमुख होकर अपने आसन पर बैठकर अपनी मनोकामना अनुसार संकल्प आदि के उपरान्त अङ्ग न्यासादि करके देवी का ध्यान करे।

ध्यानम्

श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतरतनमण्डला। रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा॥ सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा। चित्रानुलेपना कान्तीरूपसौभाग्यशालिनी॥ अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती। आयुधान्यत्र वक्षयन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात्॥ अक्षमाला च कमलं वाणोऽसिः कुलिशं गदा। चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः। शक्तिर्दण्डश्चर्मं चापं पानपात्रं कमण्डलुः॥ इति ध्यानं कृत्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य पत्रासाधनं

कुर्यात्। ततो मध्यवेद्यां सर्वतोभद्रं तन्मध्यकोष्ठेषु अष्टदलं च विलिख्य तत्र ब्रह्मादिमण्डलदेवताः स्वस्वमन्त्रैः संस्थाप्य षोडशोपचारैः सम्पूज्य तन्मध्ये पीठपूजां कुर्यात्। तद्यथा-ओं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति पीठदेवताः सम्पूज्य पूर्वादिषु-ओं जयायै नमः १। ओं विजयायै नमः २। ओं अजितायै नमः ३। ओं अपराजितायै नमः ४। ओं नित्यायै नमः ५। ओं विलासिन्यै नमः ६। ओं दोग्ध्र्यै नमः ७। ओं घोरायै नमः ८। मध्ये-ओं मङ्गलायै नमः ९। इति पीठशक्तीः पूजयेत्। ओं ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय सर्वात्मसंसर्गयोगपीठात्मने नमः, इति पुष्पाञ्जलिना आसनं दत्त्वा तत्र 'ओं महीद्यौः' इत्यादिपूर्वोक्तैर्मन्त्रैर्हृत्ताम्रकलशं संस्थाप्य तस्मिन् गन्धपुष्पफलसर्वौषधिदूर्वापञ्चपल्लव-पञ्चरत्न-सुवर्णसप्तमृत्तिकानि तत्तन्मन्त्रैः

प्रक्षिप्य कौशेयवस्त्रद्वयेन संवेष्ट्य तदुपरि ताम्रपूर्णपात्रं निधाय कलशे वरुण-मावाह्य सम्पूज्य कलशदेवताः स्मृत्वा 'कलशस्य मुखे विष्णुः' इत्यभिमन्त्र्य देव-दानवसंवादे इत्यादि प्रार्थयेत्। ततः कलशोपरिस्थपूर्णपात्रे रक्तवस्त्रे अष्टगन्धेन यन्त्रं लिखेत्। अथवा ताम्रपात्रे लिखितं यन्त्रं मूर्त्तौ वा प्रतिष्ठां कृत्वा स्थापयेत। श्री सूक्तेन आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य आवरणपूजां प्रदक्षिणक्रमेण कुर्यात्। आवरणपूजा–त्रिकोणमध्ये देवीं सम्पूज्य त्रिकोणस्य पूर्वकोणे-ओं सरस्वतीसहिताय ब्रह्मणे नमः १। नैर्ऋत्याम्-ओं श्रीसहिताय विष्णवे नमः २। वायव्याम्-ओं उमासहिताय शिवाय नमः ३। उत्तरे-ओं सिंहाय नमः ४। दक्षिणे-ओं महिषाय नमः ५। इति त्रिकोणदेवताः पूजयेत्। षट्कोणमण्डले पूर्वादिवामक्रमेण पूजयेत्। ओं नं नन्दजायै

नमः १। ओं रं रक्तदन्तिकायै नमः २ । ओं शां शाकम्भर्यै नमः ३ । ओं दुं दुर्गायै नमः ४ । ओं भीं भीमायै नमः ५ । ओं भ्रां भ्रामर्यै नमः ६ । अष्टदले वामक्रमेण ओं ब्रां ब्राह्म्यै नमः १। ओं मां माहेश्वर्यै नमः २। ओं कौं कौमार्यै नमः ३। ओं वैं वैष्णव्यै नमः ४। ओं वां वाराह्यै नमः ५। ओं नां नारसिंह्यै नमः ६। ओं ऐं ऐंद्र्यै नमः ७। ओं चां चामुण्डायै नमः ८। चतुर्विंशतिदलेष्वपि वामक्रमेण-ओं विं विष्णुमायायै नमः १। ओं चें चेतनायै नमः २। ओं बुं बुद्ध्यै नमः ३। ओं निं निद्रायै नमः ४। ओं क्षुं क्षुधायै नमः ५। ओं छां छायायै नमः ६। ओं शं शक्त्यै नमः ७ ओं तृं तृष्णायै नमः ८। ओं क्षां क्षान्त्यै नमः ९। ओं जां जात्यै नमः १०। ओं लं लज्जायै नमः ११।

ओं शां शान्त्यै नमः १२। ओं श्रं श्रद्धायै नमः १३। ओं कां कान्त्यै नमः १४। ओं लं लक्ष्म्यै नमः १५। ओं धृं धृत्यै नमः १६। ओं वृं वृत्त्यै नमः १७। ओं श्रुं श्रुत्यै नमः १८। ओं स्मृं स्मृत्यै नमः १९। ओं तुं तुष्ट्यै नमः २०। ओं पुं पुष्ट्यै नमः २१। ओं दं दयायै नमः २२। ओं मां मात्रे नमः २३। ओं भ्रां भ्रान्त्यै नमः २४। बहिर्भूतगृहचतुष्कोणेषु। ऐशान्याम् ओं गं गणपतये नमः १। आग्नेय्याम् ओं क्षें क्षेत्रपालाय नमः २। नैर्ऋत्याम्-ओं वं वटुकाय नमः ३। वायव्याम्-ओं यों योगिनीभ्यो नमः ४। पुनः पूर्वादिषु प्रदक्षिणक्रमेण -ओं इं इन्द्राय नमः १। ओं रं अग्नये नमः २। ओं यं यमाय नमः ३। ओं क्षं निर्ऋतये नमः ४। ओं वं वरुणाय नमः ५ ओं

वं वायवे नमः ६ । ओं सों सोमाय नमः ७ । ओं रुं रुद्राय नमः ८ । ओं ब्रं ब्रह्मणे नमः ९ । अधः-ओं अं अनन्ताय नमः १० । तद्बाह्ये-ओं वज्राय नमः १ । ओं शक्तये नमः २ । ओं दण्डाय नमः ३ । ओं खड्गाय नमः ४ । ओं पाशाय नमः ५ । ओं अङ्कुशाय नमः ६ । ओं गदायै नमः ७ । ओं त्रिशूलाय नमः ८ । ओं पद्माय नमः ९ । ओं चक्राय नमः १० । अथाङ्गपूजा-ओं दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि । ओं गिरिजायै नमः गुल्फौ पूजयामि । ओं अपर्णायै नमः जानुनी पूजयामि । ओं हरिप्रियायै नमः ऊरू पूजयामि । ओं पार्वत्यै नमः कटिं पूजयामि । ओं आर्यायै नमः नाभिं पूजयामि । ओं जगन्मात्रे नमः उदरं पूजयामि । ओं मङ्गलायै नमः कुक्षिं पूजयामि । ओं शिवायै नमः हृदयं

पूजयामि । ओं माहेश्वर्यै नमः कराठं पूजयामि । ओं विश्ववन्द्यै नमः स्कन्धौ पूजयामि । ओं काल्यै नमः बाहू पूजयामि । ओं आद्यायै नमः हस्तौ पूजयामि । ओं वरदायै नमः मुखं पूजयामि । ओं सुवारायै नमः नासिकां पूजयामि । ओं कमलाद्यै नमः नेत्रै पूजयामि । ओं अम्बिकायै नमः शिरः पूजयामि । ओं देव्यै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि । ततः तत्तन्मन्त्रै धूपदीपनैवेद्यादिक समर्प्य महानीराजनं प्रदक्षिणामेकां नमस्कारांश्च कृत्वा यथासम्भवं छत्रचामरादि समर्प्य फलैर्बलिं दत्त्वा अखराडदीपं स्थापयेत् । अथ रक्तवस्त्रोपरि चतुःषष्टिकोष्ठगतेषु अक्षतपुञ्जेषु क्रमेण योगिनीः पूजयेत् । ओं जयायै नमः १ ।जयमावाहयामि ओं जये ! इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाहयेत् ।एवं ओं विजयायै नमः ० २ । ओं जयन्त्यै नमः ० ३ ।

ओं अपराजितायै नमः ० ४ । ओं दिव्ययोगिन्यै नमः ० ५ । ओं महायोगिन्यै नमः ० ६ । ओं सिद्धयोगिन्यै नमः ० ७। ओं गणेश्वर्यै नमः ० ८ । ओं प्रेतासनायै नमः ० ९ । ओं डाकिन्यै नमः ० १० । ओं काल्यै नमः ० ११ । ओं कालरात्र्यै नमः ० १२ । ओं निशाचर्यै नमः ० १३ । ओं टङ्कारिण्यैनमः ० १४ । ओं रुद्रवेतालिन्यै नमः ० १५ । ओं हुङ्कारिण्यैनमः ० १६ । ऊर्ध्वकेश्यैनमः ० १७ । ओं विरूपाक्ष्यैनमः ० १८ । ओं शुक्लाङ्ग्यै नमः ० १९ । ओं नरभोजिन्यै नमः ० २० । ओं फट्कारिण्यै नमः ० २१ । ओं वीरभद्रायै नमः ० २२ । ओं धूम्राङ्ग्यै नमः २३ । ओं कलहप्रियायै नमः २४ । ओं राक्षस्यै नमः २५ । ओं विश्वरूपायै नमः २६ । ओं भयङ्कर्यै नमः २७ । ओं वीरकौमार्य्यै

नमः २८ । ओं चण्डिकायै नमः २९ । ओं वाराह्यै नमः ३० । ओं मुण्डधारिण्यै नमः ३१ । ओं भैरव्यै नमः ३२ । ओं भ्रांतिरायै नमः ३३ । ओं धूम्राङ्ग्यै नमः ३४ । ओं प्रेतवाराह्यै नमः ३५ । ओं खड्गिन्यै नमः ३६ । ओं दीर्घलम्बौष्ठ्यै नमः ३७ । ओं मालिन्यै नमः ३८ । ओं मन्त्रयोगिन्यै नमः ३९ । ओं कालिन्यै नमः ४० । ओं चक्रिरायै ४१ । ओं कं काल्यै नमः ४२ । ओं भुवनेश्वर्यै नमः ४३ । ओं शकट्यै नमः ४४ । ओं महाक्षाय्यै नमः ४५ । ओं यमदूत्यै नमः ४६ ओं करालिन्यै नमः ४७ । ओं केशिन्यै नमः ४८ । ओं मर्दिन्यै नमः ४९ । ओं रोमजङ्घायै नमः ५० । ओं निवारिरायै नमः ५१ । ओं विशालिन्यै नमः ५२ । ओं कार्मुक्यै नमः ५३ । ओं लोल्यै नमः ५४ ।

ओं अधोमुख्यै नमः ५५। ओं मुण्डाग्रधारिण्यै नमः ५६। ओं व्याघ्र्यै नमः ५७। ओं काङ्क्षिण्यै नमः ५८। ओं प्रेतरूपिण्यै नमः ५९। ओं धूर्जट्यै नमः ६०। ओं घोरायै नमः ६१। ओं करात्यै नमः ६२। ओं विषलम्बिन्यै नमः ६३। ओं मोहिन्यै नमः ६४। ओं चतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः, इति नाममन्त्रेण सम्पूज्य पायसबलिं दद्यात। ततः तत्रैव एकदेशे—'ओं बं बटुकाय नमः। क्षं क्षेत्रपालाय नमः इति सम्पूज्य-'ओ बं बटुकाय पिङ्गलभासुरनेत्राय बलिं गृहाण भक्ष भक्ष क्रन्दय क्रन्दय ह्रीं हूं स्वाहा। इति मन्त्रेण बटुकाय क्षेत्रपालाय पायसादिनानाद्रव्यबलिं दत्त्वा हस्तौ प्रक्षाल्याचमेत्। ततः अनेन पूजनेन श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यः प्रीयन्तामिति। ततः आवरण पूजां कृत्वा धूप दीप नैवेद्यादिकं समर्प्य पूर्वध्यानं कृत्वा यथाशक्ति जपं कृत्वा

कलशाग्रे पूर्वसंकल्पादि निमित्तकं पाठं कृत्वा देव्या समर्प्य आरार्त्तिकं कृत्वा कुमारिकामेकामेकं ब्राह्मणं च सम्पूज्य भोजयित्वा ताम्बूलदक्षिणा नमस्कारैः संतोषयेदिति। एवं द्वितीयायां द्विगुणं तृतीयायां त्रिगुणमिति क्रमेण नवम्यन्तं नवगुणं यथाभवति तथा पूजा चण्डीपाठ कुमारी ब्राह्मण भोजनादिकं च यथाविभव विस्तरं नवम्यन्त महोत्सवं कुर्यादिति । अत्राप्येकाहारव्रतिको नियमः कर्तव्यः । ततो नवमे दिने कृतचण्डिकापाठदशांशतः होमं कृत्वा सर्वं विधिवत्समापयेत् । यद्याचार्यद्वारा कारयति तदा तस्मै वित्तशाठ्य-रहितां दक्षिणां दत्त्वा प्रणम्य समापयेदिति ।

विसर्जनमन्त्र-ओं गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि । यत्र ब्रह्मादयो देवा न विदुः परमं पदम् । इत्युच्चार्य विसृजेत् ।

अथ शतचण्डीविधिः

शङ्करस्य भवान्या वा प्रासादनिकटे शुभम् ॥ ३ ॥ मण्डपं द्वारवेद्याढ्यं कुर्यात्सध्वजतोरणम् ॥ तत्र कुण्डं प्रकुर्वीत प्रतीच्यां मध्यतोऽपि वा ॥४॥ स्नात्वा नित्यक्रियां कृत्वा वृणुयाद्दशब्राह्मणान् । जितेन्द्रियान् सदाचारान् कुलीनान्न सत्यवादिनः ॥५॥ व्युत्पन्नांश्चण्डिकापाठरतांल्लज्जादयावतः । मधुपर्कविधानेन स्वर्णवस्त्रादिदानतः ॥ ६ ॥ जपार्थमासनं मालां दद्यात्तेभ्योऽपि भोजनम् । ते हविष्यान्नमश्नन्तो मन्त्रार्थगतमानसाः ॥ ७ ॥ भूमौ शयानाः प्रत्येकं जपेयुश्चण्डिकास्तवम् । मार्कण्डेयपुराणोक्तं दशकृत्वः सचेतसः ॥ ८ ॥ नवार्णं चण्डिकामन्त्रं जपेयुश्चायुतं पृथक् । यजमानः पूजयेच्च कन्यानां नवकं शुभम् ।

॥९॥ द्विवर्षाद्द्वादशाब्दान्ताः कुमारीः परिपूजयेत् । एकाब्दायाः प्रीत्यभावो रुद्राब्दा तु विवर्जिता ॥१०॥ तासां क्रमेण नामानि-कुमारी १ त्रिमूर्तिः २ कल्याणी ३ रोहिणी ४ कालिका ५ शाम्भवी ६ दुर्गा ७ चण्डिका ८ सुभद्रा ९ इति नाममन्त्रैस्तासां पूजा ॥ तत्र हीनाधिकाङ्गी कुष्ठव्रणयुता अन्धा काणा कुरूपा कूबरी लोमयुग्देहा दासीजा रोगिणीत्येवमाद्या वर्ज्याः। विप्रजां पूजयेत सिद्ध्यै यशसे क्षत्रियोद्भवाम् । वैश्यजां धनलाभाय पुत्राप्त्यै शूद्रजां यजेत् ॥११॥ गन्धपुष्पधूपदीपभक्ष्यभोज्यैर्यथाशक्तिवस्त्राभरणैश्च पूजयेत । द्विवर्षा सा सामयुक्ता त्रिमूर्तिर्हायनत्रिका । चतुरब्दा तु कल्याणी पञ्चवर्षा तु रोहिणी ॥१२॥ षडब्दा कालिका प्रोक्ता चण्डिका सप्तहायना । अष्टवर्षा शाम्भवी स्याद्दुर्गा तु नवहायना ॥१३॥ सुभद्रा दशवर्षोक्ता नाममन्त्रैः

प्रपूजयेत् । तासामावाहने मन्त्रः प्रोच्यते शङ्करोदितः ॥१४॥ मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम्। नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ।१५। कुमारिकादिकन्यानां पूजामंत्रान् ब्रुवेऽधुना-जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्ति-स्वरूपिणि । पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥१६॥ त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्षां ज्ञानरूपिणीम् । त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥१७॥ कलात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् । कल्याणजननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥१८॥ अणिमादिगुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम् । अनन्तशक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥१९॥ कामचारीं शुभां कांतां कालचक्रस्वरूपिणीम् । कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥२०॥ चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभञ्जनीम् । पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां

चराडविक्रमाम् ॥२१॥ सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम् । सर्वभूता-
त्मिका लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥२२॥ दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःख
विनाशिनीम् । पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्तिनाशिनीम् ॥२३॥
सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायनीम् । सुभद्रजननीं देवी सुभद्रां
पूजयाम्यहम् ॥२४॥ एतैर्मन्त्रैः पुराणोक्तैस्तां तां कन्यां समर्चयेत् (इति
पूजनं कुमारिकाणाम्), वेद्यां विरचिते रम्ये सर्वतोभद्रमराडले ॥२५॥ घटं
संस्थाप्य विधिवत्तत्रावाह्यार्चयेच्छिवाम् ॥२६॥ तदग्रे कन्यकाश्चापि पूजयेद्-
ब्राह्मणानिति । उपचारैस्तु विविधैर्नवार्णावरणान्यपि ॥२७॥ ओंकारःप्रथमं
पीठं पूर्वपीठमतः परम् । तृतीयं कामपीठञ्च पूजयेत्सम्प्रदायतः ॥२८॥ पूर्वा-
दिदिक्षु पीठस्य गणेशादिचतुष्टयम् । गणेशक्षेत्रपालौ च पादुके बटुकास्त्रयः

॥ २९॥ आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु पूज्यं देवीचतुष्टयम् । जया च विजया चैव जयन्ति चापराजिता॥३०॥ पूर्वोक्तयन्त्रे पूर्वकोणे सरस्वतीसहितो ब्रह्मा श्रीसहितो विष्णुर्नैरृत्यामुमया सहितः शिवो वायव्यां षट्कोणे चक्रमध्यबीजे श्रीमहालक्ष्मी ह्रीं महाकाली ऐं महासरस्वती क्लीं दक्षिणवामयोः उदक्सिंहो दक्षिणे महिषः षट्कोणेषु नन्दजारक्तदन्तिकाशाकम्भरीदुर्गाभीमाभ्रामर्यः सबिन्दुनामाद्यवर्णताराद्याश्चासां नारसिंह्यथैन्द्री चामुण्डा उक्तरीत्या नाममन्त्रैः पूज्याः, ततो विष्णुमायादिचतुर्विंशतिदेवताः प्रागादिक्रमेण केसरेषु पूज्याः, त्रिपत्रश्च केतरत्रयम् । ताश्च विष्णुमाया १ चेतना २ बुद्धि ३ निद्रा ४ क्षुधा ५ छाया ६ शक्ति ७ तृष्णा ८ शान्ति ९ जाति १० लज्जा ११ क्षान्ति १२ श्रद्धा १३ कान्ति १४ लक्ष्मी १५ धृति १६ वृत्ति १७

स्मृति १८ दया १९ तुष्टि २० पुष्टि २१ मातृ २२ भ्रान्ति २३ चिति २४ रूपा एतावत्यः सप्तशतीस्तवे पञ्चमेऽध्याये आसां चतुर्विंशतीनां न पाठ इति न भ्रमितव्यम्, कात्ययायनीतन्त्रविरोधात्। नालमूले तु सम्पूज्यमाधारादि-चतुष्टयम् ॥ आधारः कूर्मशेषौ च चतुर्थी पृथिवी नृप ॥३१॥ गृहकोणेषु गणेशक्षेत्रपालौ बटुको योगिन्यः प्रागादिदिक्षु इन्द्राद्याश्चेति एवं चतुर्दिनं कुर्यात्तत्र प्रथमेऽह्नि एकावृत्तिर्द्वितीय द्वे तृतीये तिस्रश्चतुर्थे चतस्र इति पञ्चमे होमः। होमद्रव्याणि-पायसान्नैस्त्रिमध्वक्तैर्द्राक्षारम्भाफलादिभिः। मातुलिङ्गै रिक्षुखण्डैर्नारिकेलयुतैस्तिलैः ॥३२॥ जातीफलैराम्रफलैरन्यैर्मधुरवस्तुभिः । इति सप्तशत्या दशावृत्या प्रतिमन्त्रं हुतञ्चरेत् ॥३३॥ अयुतञ्च नवार्णेन स्थापितेऽग्नौ विधानतः। कृत्वाऽऽवरणदेवानां होमं तन्नाममन्त्रतः ॥३५॥ कृत्वा पूर्णाहुतिं

सम्यग्देवमग्निं विसृज्य च । अभिषिञ्चेच्च यष्टारं विप्रौघः कलशोदकैः ॥३५॥
निष्कंसुवर्णमथवा प्रत्येकं दक्षिणां दिशेत् । भोजयेच्च शतं विप्रान्
भक्ष्यभाज्यैः पृथग्विधैः॥३६॥ तेभ्योऽनि दक्षिणां दत्वा गृह्णीयादाशिषस्तथा ।
एवं कृते जगद्वश्यं सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः ।

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति ॥ १ ॥

साब्रवीत्—अहं ब्रह्मस्वरूपिणी मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत् । शून्यं चाशून्यं च ॥२॥

अहमानन्दानानन्दौ । अहं विज्ञानाविज्ञाने । अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये । अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि । अहमखिलं जगत् ॥३॥

वेदोऽहमवेदोऽहम् । विद्याहमविद्याहम् । अजाहमनजाहम् । अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम् ॥४॥

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि । अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः । अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि । अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ ॥५॥

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि । अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि ॥६॥

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते । अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् । अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे । य एवं वेद । स दैवीं सम्पदमाप्नोति ॥७॥

ते देवा अब्रुवन्--नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥८॥

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः ॥९॥
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु ॥१०॥
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् ।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् ॥११॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥१२॥
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव ।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ॥१३॥
कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः ।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम् ॥१४॥

एषाऽऽत्मशक्तिः । एषा विश्वमोहिनी । पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा । एषा श्रीमहाविद्या । य एवं वेद स शोकं तरति ॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः ॥१६॥

सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः। सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च। सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः। सैषा सत्त्वरजस्तमांसि। सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी। सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि। कलाकाष्ठादि-कालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्। पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्। अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम्॥१७॥

वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्। अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्॥१८॥
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः। ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः॥१९॥
वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्। सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः।
नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः। विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः॥२०॥
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्। पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे॥२१॥

नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्। महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्॥२२॥

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका।

एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति ॥२३॥

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी। ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानांशून्य साक्षिणी। यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता ॥२४॥

तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्। नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् ॥२५॥

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः।दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते। महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥२६॥

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतपापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। निशाथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसंनिधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्यु तरति य एवं वेद। इत्युपनिषत् ॥

हवन विधि

जिस दिन हवन करना हो उस दिन यजमान स्नान आदि करके संध्या प्राणायाम आदि के उपरान्त जहां हवन करना हो वहां पूर्वाभिमुख होकर बैठे और पुरोहित उत्तराभिमुख हो कर बैठे।

पुरोहित यजमान के सन्मुख दक्षिणदिशा में नवग्रहादि बनावें और उत्तर दिशा में हवन कुण्ड अथवा स्थण्डली बनावे। (किसी किसी आचार्य का मत है "कुण्डे तु बहवो दोषाः। स्थण्डिले बहवो गुणाः। तस्मात्कुण्डं परित्यज्य स्थण्डिले हवनं चरेत्"।) कुण्ड में बहुत प्रकार के खात, अर्थात् पृथ्वी में शल्य तथा मान आदि देखने में ठीक न होने से अनेक उपद्रव हो जाते हैं इस कारण स्थण्डिल कोही श्रेष्ठ माना है। नाप में कम होने से रोग, विशेष होने से वैर अनेक प्रकार के दोष देता है।)

नवग्रहस्थापन विधि

मध्ये तु भास्करं विद्याच्छशिनं पूर्वदक्षिणे। लोहितं दक्षिणे विद्याद् बुधपूर्वे तथोत्तरे ॥१॥
उत्तरेण गुरुं विद्यात् पूर्वेणैव तु भार्गवम्। पश्चिमे च शनिं विद्याद्राहुं दक्षिण पश्चिमे ॥२॥
पश्चिमोत्तरतः केतुं ग्रहस्थापनमुत्तमम्। भास्करं वर्तुलाकारम् अर्द्धं चन्द्रं निशाकरम् ॥३॥
त्रिकोणं मंगलं चैव बुधश्च धनुराकृतिम्। पद्माकारं गुरुश्चैव चतुष्कोणं च भार्गवम् ॥४॥

खड्गाकृतिं शनिं विद्यात् राहुश्च मकराकृतिम् ॥ केतुं ध्वजाकृतिश्चैव इत्येता ग्रहमूर्त्तयः ॥५॥ भास्कराङ्गारकौ रक्तौ, श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ । हरितो ज्ञो गुरुः पीतः शनिः कृष्णस्तथैव च, राहुकेतू तथा धूम्रौ,कारयेच्च विचक्षणः ॥६॥ मण्डलादैशाने क्रमशः गणेश ओंकारं श्रीलक्ष्मी ६४ योगिन्यः स्थापयेत् । पुनः ग्रह वेदी उत्तरतः षोडश कोष्ठरूपाः षोडशमातरः ईशाने घटं स्थापयेत् । ततो घटसमीपे दीपं मण्डलाद् दक्षिणे कृष्णसर्पश्च स्थापयेत् ।

यजमान पूर्व की ओर मुख करके बैठे तथा नीचे लिखे मन्त्र से अपने ऊपर तथा सामग्री पर गंगाजल का छींटा लगावें ।

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥

फिर यजमान स्वस्ति वाचन करने के उपरांत हाथ में जल लेकर संकल्प करे ।

ओं विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः तत्सदद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे जम्बुद्वीपे भरत-खण्डे आर्यावर्ते वर्तमानकलियुग प्रथमचरणे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरान्वितायाम्-अमुक करण नक्षत्र योग

युक्तायां अमुकगोत्रोऽमुक शर्माहं सपत्नीकोऽहं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यायुरारोग्य विपुल-पुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्न सन्तति स्थिर लक्ष्मी कीर्ति लाभशत्रु पराजय सदभीष्ट सिद्ध्यर्थं श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं ब्राह्मण द्वारा कृतस्य नवचण्डी, शतचण्डी, सहस्रचण्डी वा सप्तशती पाठस्य साङ्गतासिद्ध्यर्थं तद्दशांश तर्पणं तद्दशांश मार्जनं तद्दशांश ब्राह्मण भोजन च करिष्ये। तन्निर्विघ्नपरिसमाप्तये गणपति पूजनं च करिष्ये ॥

[ब्रह्मा वरणं]

हाथ में धोती पान, सुपारी, दक्षिणा, मौली, चावल, तिलक, पुष्प और जल ले कर संकल्प करे और ब्रह्मा को अर्पण करे।

अद्येहेत्यादिऽमुक गोत्रोऽहं अमुक शर्म्माहं श्री महाकाली, महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थं अस्मिन् श्री दुर्गा हवन कर्मणि सांगता फलप्राप्त्यर्थं एभिर्गंधाक्षत पुष्पतांबूल पूगीफल दक्षिणावासोभिः अमुक गोत्रोत्पन्नं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ॥

फिर ब्राह्मण को कङ्कण बन्धन करे और ब्रह्मा रूप ब्राह्मण नीचे लिखा मन्त्र पढ़े।

ओं व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

फिर यजमान ब्रह्म रूप ब्राह्मण को तिलक करे और ब्राह्मण नीचे लिखा मन्त्र पढ़े ।

नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मणहिताय च । जगाद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ।।

[आचार्यवरणं]

धोती पर सब चीजें रखकर आचार्य के वरण का सकल्प करे ।

अद्यामुक गोत्रोऽहं ऽमुक शर्माहं अस्मिन् श्री दुर्गाहवन कर्मणि सांगता फल प्राप्त्यर्थं एभिः गधाक्षतपुष्प चंदन तांबूल वासोभिः अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे ।

फिर आचार्य को कङ्कण बन्धन करे और आचार्य नीचे लिखा मन्त्र पढ़े ।

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।

दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

फिर आचार्य को तिलक करे और आचार्य नीचे लिखा मन्त्र पढ़े ।

नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ।

फिर यजमान कहे । विहितं कर्मकुरु ।

करवाणीति ब्राह्मणो वदेत् ।

फिर आचार्य हाथ में चावल लेकर नीचे लिखे मन्त्र के अनुसार उन उन दिशाओं में छोड़े ।

पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेयां गरुड़ध्वजः । याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैऋृते । केशवो वारुणीं रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः । उत्तरे श्रीधरो रक्षेदैशाने तु गदाधरः । शंखं रक्षतु यज्ञाग्रे यज्ञपृष्ठे च पद्मकम् । वामपार्श्वे गदा रक्षेद्दक्षिणे च सुदर्शनम् ॥

उपेन्द्रो रक्षतु ब्रह्माणमाचार्यं पातु वामनः । अच्युतः पातु ऋग्वेदं यजुर्वेदमधोक्षजः ॥ कृष्णो रक्षतु सामानि अथर्वाणं तु माधवः । यजमानं सपत्नीकं पुण्डरीकाक्षश्च रक्षतु ॥

फिर आचार्य यजमान को नीचे लिखे मन्त्र से तिलक करे ।

ओं आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः । तिलकंते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये ।

फिर आचार्य यजमान को मौली वांधे ।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः तेनत्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल माचल ॥

फिर गणपत्यादि पूजन करे। फिर अधिदेवता का आवाहन और पूजन करे। फिर दश दिग्पालों का आवाहन और पूजन करे।

पूजन के उपरांत कुशकांडिका करके अग्नि स्थापन करे। अग्नि से दक्षिण दिशा में ब्रह्मा को प्राक् दक्षिण क्रम से कुशासन पर उत्तर मुख करके बैठावे। फिर प्रणीता पात्र में जल भरकर कुशा सें ढक कर ब्रह्मा का मुख दिखावे और आग्न से उत्तर की तरफ कुशा के ऊपर धरे। फिर कुशकण्डिका के अनुसार कुशा बिछावें। एक प्रोक्षणी पात्र धरें। घी का कटोरा धरें। मार्जन के लिए तीन कुशा धरें। तीन कुशा गूदकर उत्तर से पश्चिम की तरफ धरें। अंगूठे से तर्जनी के बराबर तीन लकड़ी धरें। फिर चावल से भरा हुआ पूर्णपात्र रखे। अनन्तर उसी दिशामें और सब वस्तु स्थापन करें। पवित्र छेदन कुशाओं से पवित्री की कुशा को प्रादेश मात्र छेदन करे। फिर ब्राह्मण पवित्री की कुशाओं सहित प्रणीता का जल हाथसे तीन बार प्रोक्षणी पात्रमें डाले। अनामिका और अंगूठे के अग्र भाग में पवित्रे की कुशाको पकड़ कर प्रोक्षणी पात्र में से तीन बार ऊपर को छींटा दे। फिर प्रणीता के जलसे प्रोक्षणी पात्र में तीन बार उसी कुशा से छींटा दे और प्रोक्षणी पात्र के जल का सब जगह छींटा लगावे। अग्नि और प्रणीता के मध्यमें प्रोक्षणी पात्र रखे। फिर घी का बर्तन अग्नि पर रखकर गरम करले। फिर स्रुवे को अग्नि से तपा ले और संमार्जन कुशाओं को लेकर स्रुवे के आरम्भ मेंसिरे कीकुशा

लगावे। तीन लकड़ी घी में भिगो कर अग्नि में डाले।

ब्रह्म से लेकर घुटने तक मौली रखे। फिर स्रुवे से नीचे लिखी आहुतियां घी की डाले। और आहुति से बचा हुआ घी प्रोक्षणी पात्र में भी डालता जाए।

ओं प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ॥ इति मनसा। ओं इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय। इत्याघारौ। ओं अग्नये स्वाहा इदमग्नये। ओं सोमाय स्वाहा इदं सोमाय। इत्याज्य भागौ। ओं भूः स्वाहा इदमग्नये ॥ ओं भुवः स्वाहा इदं वायवे। ओं स्वः स्वाहा इदं सूर्याय। (एता महा व्याहृतयः।) ओं त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः यजिष्ठो वन्हितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ इदमग्नी वरुणाभ्याम्। ओं स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्ठो अस्या उषसोव्युष्टौ। अवयद्वनो वरुण ँ रराणो वीहिमृडीक ँ सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नी वरुणाभ्याम्।

ओं अयाश्चाग्नेस्यनभि शस्तिपाश्च सत्वमित्वमयाअसि। अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ँ स्वाहा इदमग्नये ॥ ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता–महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत्त विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय

सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः। ओं उदुत्तमं वरुणपाशम स्मदवाधमं विमध्यम ँ श्रथाय। अथावयमादित्य व्रते तवा नागसो ऽदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणाय॥

नीचे लिखी आहुतियां घुटने से ब्रह्मा वाली मौली हटा कर दे।

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये (इति मनसा प्राजापत्यम्) ओं अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते। ओं गणपतये स्वाहा॥

इस के उपरान्त गणेशादि मंडल में स्थापित देवताओं तथा नवग्रहों के मन्त्रों द्वारा आहुतियां दे। फिर हाथ में जल लेकर संकल्प करे।

ओं विष्णु विंष्णु विंष्णुःअद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे युगे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे आर्य्यावर्तान्तिर्गत ब्रह्मवर्तैक-देशे पुण्य क्षेत्रे वेदोक्त फलप्राप्ति कामसिद्ध्यर्थं वर्तमान संवत्सरेअमुकायने अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोहममुक शर्म्माहं सकल पाप क्षय पूर्वक सकल मगल प्राप्त्यै सर्वारिष्ट निवारणार्थं सर्वत्र हर्षविजय-सिद्ध्यर्थं श्री महा काली महालक्ष्मी

महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थं कवचार्गल कीलकम्, रात्रि सूक्तम् नवार्णं च आद्यंतयोः पञ्च सूक्त च मार्कण्डेय उवाच इत्यारभ्य सावर्णि र्भविता मनुरित्यंतं सप्तशती हवनमहं करिष्ये।

संकल्प के उपरान्त कवच, अर्गला, कीलक का पाठ करके अंग न्यास करके नवार्णमंत्र की १०८ आहुति देकर देवी सूक्त तथा सप्तशती न्यास करके फिर मार्कण्डेय उवाच से आरम्भ करके ओं सावर्णि-र्भविता मनुःतक प्रत्येक श्लोक के अन्त में 'स्वाहा' कहकर आहुति देते जावें। फिर न्यास करके १०८ नवार्ण मंत्र की आहुति दें।

प्रत्येक अध्यायके अन्त में ओं जय जय मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिकेमन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्य) मम कामा जगदम्बार्पणमस्तु॥ ऐसा कहकर जल छोड़ दे। प्रत्येक अध्याय के अंत में भोजपत्र में एक सुपारी २ लौंग १ छोटी इलायची, पान, कमलगट्टा, लपेट कर और घी में भिगोकर नीचे लिखे मंत्र से आहुति दें। इसके साथ पहले अध्याय में शहद, दूसरे में गुगल, तीसरे में भी गुगल, चौथे में मिश्री वा पायस, पांचवें में कपूर पुष्प वा ऋतु फल, छटे में भोजपत्र, सातवें में जायफल, आठवें में लालचन्दन, ९वें १०वें में बेलफल, ११वें में पुष्प पायस, १२वें में केला, १३वें अध्याय में फल या फूल लेकर खड़े होकर आहुति दें

ओं अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कां पील-वासिनीं स्वाहा॥

फिर घी से तीन आहुति दें।

१. ओं अम्बायै स्वाहा। २. ओं अम्बिकायै स्वाहा। ३. ओं अम्बालिकायै नमो नमः स्वाहा॥

फिर हवन के दशांश की एक माला "ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा" का तर्पण करे और तर्पण के दशांश का मार्जन करे।

एक बर्तन में जल लेकर उसमें दूध गंगाजल मिलाकर फूल या कुशा से तर्पण करे। और अग्नि में छींटा लगाने को मार्जन कहते हैं।

इसके उपरांत वेदी के चारों तरफ दश दिशाओं में दस दीवे धर कर उनमें दस घी की बत्ती जलावें। दही-उड़द-सिंदूर-यह भी उनके पास रखे। यह दश दिक्पाल की बली है।

फिर चावल लेकर ओं एतन्ते देव०-इत्यादि मन्त्र से प्रतिष्ठा करे। फिर नीचे लिखे अनुसार संकल्प करें।

अमुकगोत्रोहं अमुक शर्म्माहं भो दश दिक्पालाः दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्न कर्ता वरदो भव।

फिर क्षेत्रपाल की बलि दें।

आटे का एक चौमुखा दिया बनाकर उसमें चार बत्ती डालकर कड़वा तेल डालें और उसको जलावें। फिर दही-उड़द की दाल सिंदूर-स्याही पैसा यह भी उसके पास रखें और चावल लेकर ओं एतन्ते देव० इस मन्त्र से प्रतिष्ठा करके पूजन करके हाथ जोड़ें।

ओं करकलितकपाल:कुंडली दण्डपाणिस्तरुण तिमिरनील व्याल यज्ञोपवीती। क्रतुसमय सपर्या विघ्न विच्छेद हेतुर्जयति वटुक नाथः सिद्धिदः साधकानाम्। ओं क्षेत्र पाल-शाकिनीडाकिनि भूतप्रेत वेतालपिशाच सहिताय इमं बलिं समर्पयामि॥

फिर जल-चावल लेकर संकल्प करें।

अमुक गोत्रोऽहं अमुक शर्माहं भो क्षेत्र पाल दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुष्कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव॥

फिर दीपक को वहां से उठा दें और उस स्थान पर ओं अपवित्रः पवित्रो वा० से जल का छींटा लगावें।

फिर एक कूष्मांड अथवा जुट लेकर उसको खड्ग से एक ही वार में काटकर सिंदूर लगा दें वह देवी के लिए बलि होगी।

खड्ग पूजा--ओ ह्रीं ह्रीं खड्ग ऐसा ध्यान करके और अर्घ्यादि देकर ओं कालि कालि यज्ञेश्वरि। लोहदण्डायै नमः। मुष्टि देशे सरस्वती ब्रह्माभ्यां नमः। मध्ये लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः। अग्रे उमामहेशाभ्यां नमः॥

नीचे लिखे मंत्र से खड्ग से काटे।

ओं आं ह्रीं फट् इति मन्त्रेण विमलं खड्गं गृहीत्वा॥ एक हस्तेन द्वाभ्यां वा एकच्छेदेन घातयेत्॥

फिर पूर्णाहुति दें।

स्रुवे पर घी का भरा नारियल और चरु धरे उसकी ओं एतन्ते देव० इस मंत्र से प्रतिष्ठा तथा पजन करके लेकर खड़ा हो जाये और नीचे लिखे मन्त्र से नारियल को अग्नि में धर दे।

ओं मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्॥ कविँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा॥

नीचे लिखे मन्त्र से नारियल पर घी की धारा छोड़ें।

ओं वसोः पवित्रमसि शतधार वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु

वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुत्तः ॥

स्रुवे से नीचे लिखे मंत्रों से भस्म अनामिका अंगुली से पहले अपने को लगावें फिर यजमान को लगावें। त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे-माथे पर। कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्-गलेपर। यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहुमूले-दक्षिण बाहु पर। तत्ते अस्तु त्र्यायुषमिति हृदये-छाती पर। इसके उपरांतस्रुवेपर से अनामिका अंगुली से घी लगाकर खाले फिर आचमन करे। फिर **ओं अपवित्रः पवित्रो वा०** मंत्र से प्रणीता पात्र से जल लेकर छींटा दे। और नीचे लिखे मंत्र से प्रणीता पात्र को ईशानदिशा में उल्टा दें।

ओं दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥

फ़िर ब्रह्मा की गांठ खोल दे और वेदी के चारों तरफ की सब कुशायें उठाकर अग्नि में नीचे लिखे मंत्र से डाल दे।

ओं देवा गातु विदो गातु वित्वा गातुमित मनसस्पत इमंदेवयज्ञ ँ स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥

इसके उपरांत परिक्रमा करके कुम्भ के जल से आम के पत्ते के साथ यजमान को परिवार सहित अभिषेक करे। फिर तिलक लगाकर यजमान को झोली में कुछ मीठा वगैरा डालें।

इसके उपरांत ब्राह्मणोंको दक्षिणा देकर कुमारी कन्याओं का पूजनकरे फिर ब्राह्मणों को भोजन करावे।

दुर्गा हवन सामग्री

श्रीफल कच्चे, सर्वौषधी, रोली, कलावा सुपारी, कपूर, केशर अबीर, गुलाल, हल्दी पिसी, मंहदी पिसी, सिंदूर, धूपवत्ती, अगरबत्ती, मोली, कमलगट्टे, १५ नग बेलगिरी, गुगल, छोटी इलायची, लौंग, मनफल २ नग, जयफल, भोजपत्र, सफेद और लाल चन्दन, पांचों मेवा, मिश्रीं मखन, पीली सरसों, काली मिर्च, गिलोय हरी, ढाक की लकड़ी, काले तिल, चावल, जौ बिने हुए, चीनी, घी, खड़िया, गोले २ नग, कूजे २ मिश्री के, खैर की लकड़ी, आत्मनी, पच पात्र, माला, जषस्थली, धोती, अंगोछे, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, पाकस्थाली कलश तांबे के, लोटा तांबे का, कटोरे तांबे के, कांसे के कटोरे, पूर्णपात्र. कटोरी कांसे की छायादान को, दूध कच्चा, दही, नैवेद्य, बरफी लडडू. ऋतु फल. शहद, आसन, मलमल, टूल बड़े अर्ज की, खारुआ, चुन्दरी, पीली छोट, दरयाई पीली, सुहाग पिटारी, अंगूठी सोने की, मूर्ति सोने की १, वाली सोने की १, चमेली का तेल, इत्र केवड़ा पंचरत्नी, छोटी हरड, आमले, मुनक्का, अदरक, बेर उर्द की दाल, कचौड़ी, पूरी, आम के पत्ते, बड़ के पत्ते, पीपल के पत्ते, व डाली छत्तर फूलों का, छोकर के पत्ते डाली, वन्दनवार चन्दोआ, फूलों की फूल माला, फूल, दूर्वा, जनेऊ, अनार की कली, गंगाजल, रेत, कुशाभटकने सकोरे, पत्तलें, रूई; दियासलाई खंभ केले के, गन्ने, चाकू, सुतली, मीठा तेल, दाल चने की, मूंग हरी, उर्द काले, दाल मसूर उर्द के बड़े, आक की डाली, अलोंगा पान, गोबर, गोमूत्र, डोने १ गड्डी, रेजगारी, पैसे रुपये, चौकी एक गज लम्बी चौड़ी, छोटी चौकी ४ आध गज लम्बी चौड़ी, पटरा आध गज का, बलिदान करने का शस्त्र, पेठा १ बलि करने को, पालक व वथुये का साक, आज्यस्थाली ।

आरती दुर्गा जी की

ओं जय अम्बे गौरी श्यामा जय अम्बे गौरी ।। जै मंगल करणि, जै आनन्द करणि ।।
तुम को निशदिन ध्यावै, तुम को सब दिन ध्यावै हरी, ब्रह्मा शिव री । ओं जय०
मांग सिंदूर विराजै, टीको मृग मद को ।। उज्ज्वल से दौउ नैना, चन्द्र बदन नीको ।। जै०
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै ।। रक्त पुष्प, गल माला, कंठन पर साजै ।। जै०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।। कोटिक चन्द्र दिवाकर, तिनके समजोती ।। जै०
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारि ।। सुर-नर मुनि जन सेवक, तिनके दुख हारि ।। जै०
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ।। धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मद मोती ।। जै०
चौसठ योगिनी गावत, निरत करत भैरों ।। बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरो ।। जै०
भुजा अष्ट अति शोभित, वर अभयधारी ।। मन वांछित फल पावत, सेवत नर नारी ।। जै०
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।। मालकेतु में राजत, कोटि रतन जोती ।। जै०
आदि शक्ति की आरती, निशदिन जो गावे ।। कहत शिवा नन्द स्वामी मन वांछित फल पावे ।। जै०

श्रीदुर्गा जी की आरती

सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी कोई तेरा पार न पाया ॥ टेक ॥

पान सुपारी ध्वजा नारियल ले तेरी भेंट चढ़ाया ॥ सुन० ॥ १॥

सारी चोली तेरे अङ्ग बिराजे केसर तिलक लगाया ॥ सुन० ॥ २ ॥

ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शङ्कर ध्यान लगाया ॥ सुन० ॥ ३ ॥

सतयुग द्वापर त्रेता मध्ये कलयुग राज सवाया ॥ सुन० ॥ ४ ॥

धूप दीप नैवेद्य आरती मोहन भोग लगाया ॥ सुन० ॥ ५ ॥

भगत मैया तेरा गुण गावे मनवांछित फल पाया ॥ सुन० ॥ ६ ॥

UGAR, LIQUID
POWDER, SKI
CH, PERMITTE

D PRODU
PHONE : 2986

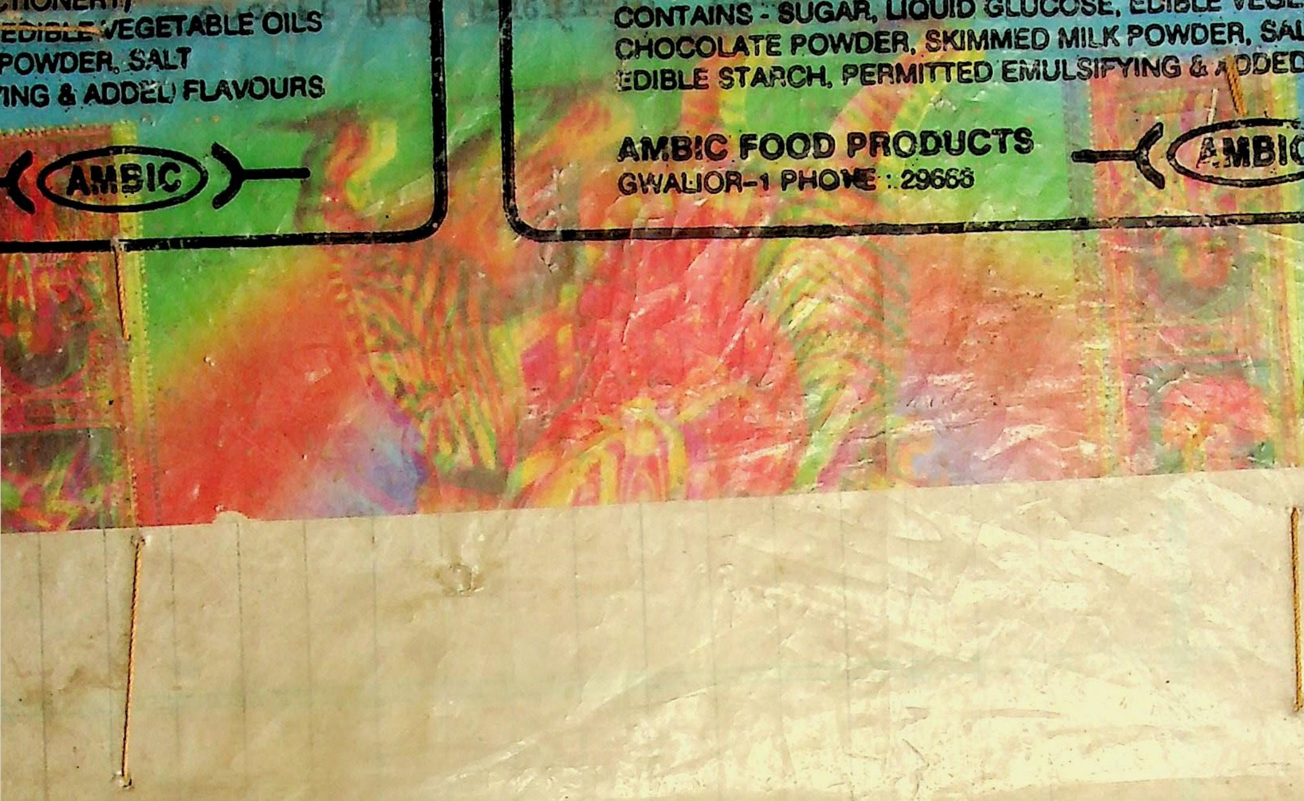
EDIBLE VEGETABLE OILS
POWDER, SALT
ING & ADDED FLAVOURS
AMBIC
CONTAINS - SUGAR, LIQUID GLUCOSE, EDIBLE VEGE
CHOCOLATE POWDER, SKIMMED MILK POWDER, SAL
EDIBLE STARCH, PERMITTED EMULSIFYING & ADDED
AMBIC FOOD PRODUCTS
GWALIOR-1 PHONE
AMBIC